DELHI PUBLIC SCHOOL
BOPAL
AHMEDABAD

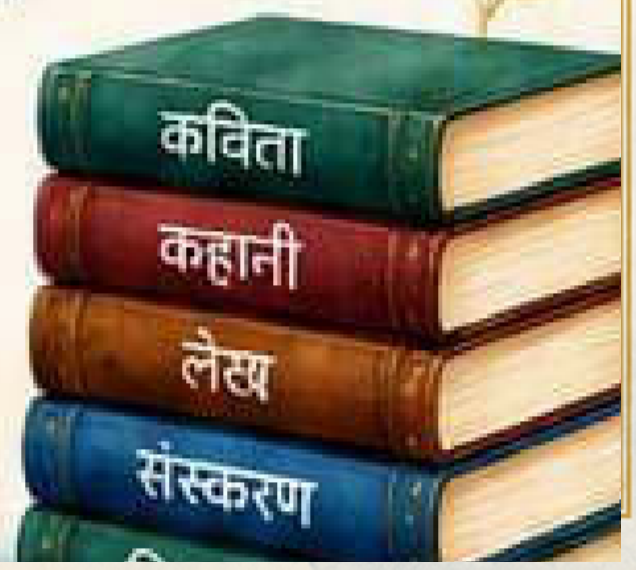
संस्करण
03
सत्र
२०२६–२७

हिंदी ई-पत्रिका

उन्मुक्त

: विचारों की उड़ान

जहाँ शब्दों को मिलते हैं पंख,
और विचार भरते हैं नई उड़ान।



प्रस्तावना

प्रिय पाठकों,

सादर नमस्कार!

विचारों को जब अभिव्यक्ति के पंख मिलते हैं, तब कल्पनाएँ उड़ान भरती हैं और सृजन का एक नया संसार आकार लेता है। इस भाव को आत्मसात करते हुए हमारी ई-पत्रिका 'उन्मुक्त : विचारों की उड़ान' आपके समक्ष प्रस्तुत है।

यह ई-पत्रिका हमारे विद्यार्थियों की प्रतिभा, कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सुंदर प्रतिबिंब है। इसमें संकलित रचनाएँ केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों के विचारों, अनुभवों और सपनों की जीवंत अभिव्यक्ति हैं।

आज के डिजिटल युग में ई-पत्रिका विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता को एक व्यापक मंच देने का सशक्त माध्यम है। हमारा प्रयास है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने विचारों को मुक्त होकर व्यक्त करे, नई दृष्टि विकसित करे और निरंतर कुछ नया सृजित करने के लिए प्रेरित हो।

इस ई-पत्रिका को साकार करने में योगदान देने वाले सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं सहयोगियों का हृदय से आभार। उनकी मेहनत, उत्साह और रचनात्मक सहयोग ने इस प्रयास को सार्थक बनाया है।

आशा है कि 'उन्मुक्त : विचारों की उड़ान' आप सभी को पसंद आएगी, छात्रों की सृजनात्मकता को विकसित करेगी और उनकी रचनात्मकता के नवीन आयाम रचेगी।



प्रधानाचार्या की कलम से



प्रिय विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों,

यह हर्ष एवं गर्व का विषय है कि हमारे विद्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'उन्मुक्त- विचारों की उड़ान ' अपने तीसरे अंक के साथ आप सभी के समक्ष उपस्थित है। 'उन्मुक्त' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, अभिव्यक्ति और विचारों की स्वतंत्र उड़ान का जीवंत दस्तावेज़ है। हिंदी हमारी भावनाओं की भाषा है और हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की संवाहक है । जब हमारे नन्हें विद्यार्थी अपनी कल्पनाओं को शब्द देते हैं, अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं और अपनी रचनात्मक दृष्टि से संसार को देखते हैं, तब भाषा केवल विषय नहीं रहती, बल्कि सीखने, सोचने और स्वयं को पहचानने का माध्यम बन जाती है। इस अंक में विद्यार्थियों की विविध रचनाएँ उनकी संवेदनशीलता और सृजनात्मक प्रतिभा का सुंदर परिचय देती हैं। उनकी कविताओं, कहानियों, विचारों और अभिव्यक्तियों में कहीं कल्पना की उड़ान है, कहीं जीवन-मूल्यों की झलक, तो कहीं अपने आसपास की दुनिया को समझने और उसे बेहतर बनाने की आकांक्षा। इन रचनाओं में छिपी मौलिक सोच और सहज अभिव्यक्ति निश्चित रूप से सराहनीय है।

मेरा विश्वास है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि प्रत्येक छात्र के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानना और उसे विकसित होने के अवसर प्रदान करना है। ऐसे मंच विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति-कौशल, कल्पनाशक्ति, संवेदनशीलता और सृजनात्मक सोच को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मैं इस अंक को आकार देने वाले सभी विद्यार्थियों, हिंदी विभाग एवं संपादकीय टीम के प्रयासों की हृदय से सराहना करती हूँ। शिक्षकों का मार्गदर्शन और विद्यार्थियों का उत्साह मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी रचनात्मक यात्रा बनाते हैं, जो निरंतर आगे बढ़ती रहेगी।

आइए, हम सभी मिलकर हिंदी के प्रति अपने प्रेम को और गहरा करें तथा अपने विचारों को शब्दों के पंख देकर 'उन्मुक्त' की इस उड़ान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ। मेरी शुभकामनाएँ हैं कि यह अंक आप सभी के मन को स्पर्श करे, नए विचारों को जन्म दे और हमारे विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए सदैव प्रेरित करता रहे।

शुभकामनाओं सहित,

सबीना साहिनी

प्रधानाचार्या

डी.पी.एस. - बोपल, अहमदाबाद

विभागाध्यक्षों की शुभकामनाएँ



श्रीमती उमा माहेश्वरी
उप-प्रधानाचार्या



श्रीमती नीना जानी
प्रभारी- माध्यमिक विभाग



श्रीमती समिंदर कौर गुलियानी
प्राथमिक शिक्षा-प्रभारी



श्रीमती रुपल परीख
संस्थापक शिक्षा-प्रभारी

हिन्दी की समृद्धि और सृजनशीलता को समर्पित यह पत्रिका हिन्दी भाषा के गौरव को नई ऊँचाइयाँ देने का एक अनुपम प्रयास है। हम कामना करते हैं कि हिन्दी साहित्य के प्रति विद्यार्थियों का अनुराग निरंतर बढ़ता रहे। यह पत्रिका हिन्दी भाषा के सम्मान और उसकी रचनात्मकता को बढ़ाने की दिशा में एक विशेष पहल है। आशा है कि इसके माध्यम से विद्यार्थियों का हिन्दी साहित्य के प्रति प्रेम और भी प्रगाढ़ होगा। इस सुंदर प्रयास में जुटे सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को हमारी ओर से ढेरों शुभकामनाएँ।

विभागाध्यक्ष की कलम से...



प्रिय विद्यार्थियों,

आज की दुनिया तेज़ी से बदल रही है, और आप इस बदलाव की सबसे जीवंत ऊर्जा हैं। स्कूली शिक्षा की यह यात्रा केवल अंकों और ग्रेड्स तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आपकी अनूठी प्रतिभा को खोजने और सँवारने का एक स्वर्णिम अवसर है।

किताबों से परे भी ज्ञान की एक विशाल दुनिया है। साहित्य, कला, खेल, संगीत और नए प्रयोगों में अपनी रुचि जगाएँ। सच्चा ज्ञान वही है जो आपकी सोच को आज़ादी दे और आपके नज़रिए को विस्तृत करे। असफलताओं से घबराएँ नहीं; वे आपकी प्रगति के रास्ते का पत्थर नहीं, बल्कि आपको परिपक्व बनाने वाले पाठ हैं।

इस डिजिटल युग में तकनीक आपके हाथों में है। इसका उपयोग अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए करें, न कि सोशल मीडिया की चकाचौंध में खुद को सीमित करने के लिए। सपनों की ऊँची उड़ान भरें, लेकिन अपने संस्कार, संस्कृति, अनुशासन और मानवीय मूल्यों की जड़ों को हमेशा मज़बूत रखें।

पर्यावरण और समाज के प्रति जागरूक एवं उत्तरदायी बनें। याद रखें, आप केवल भविष्य के कर्णधार ही नहीं, बल्कि आज के परिवर्तन के नायक हैं। अपनी शक्ति पर भरोसा रखें और निर्भीक होकर आगे बढ़ें।

शुभकामनाओं सहित

हुकम सिंह

हिन्दी विभागाध्यक्ष

विभागाध्यक्षा की कलम से...



वर्तमान परिपेक्ष्य में हिंदी शिक्षण अपने-आप में अनेकानेक चुनौतियों से भरा है। नवीन शिक्षा नीति के अंतर्गत भाषा के सीखने-जानने की दिशा में कई सराहनीय कदम उठाए गए हैं जिनके दूरगामी परिणाम होंगे ऐसा दृढ़ विश्वास है। नई पीढ़ी हिंदी को जाने, समझे व इसके महत्त्व को स्वीकारे, हमारे देश की राजभाषा हिंदी के प्रति छात्रों का रुझान निरंतर बढ़ता रहे और उनमें क्रियात्मकता व रचनात्मकता का विकास हो, इस दिशा में विद्यालय के शिक्षक-वर्ग के प्रयास सराहनीय हैं। इस श्रृंखला में इ-पत्रिका- उन्मुक्त –विचारों की उड़ान का तृतीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका में जहाँ छात्रों की मौलिक कृतियों का समावेश है, वहीं शिक्षकों व अभिभावकों की कृतियाँ भी सम्मिलित की गई हैं। साथ ही साथ, इस वर्ष में की गई शिक्षण गतिविधियों की कुछ झलकियाँ भी समाविष्ट की गई हैं। हिंदी पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने अनुभव एवं रचनात्मक विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। अपनी रचना को पत्रिका में स्थान पाते देखकर बच्चों में उत्साह, आत्मविश्वास और उपलब्धि की भावना विकसित होती है। यह पत्रिका बच्चों को नए शब्दों एवं भाषा-प्रयोग से परिचित होने, अपनी प्रतिभा पहचानने और उसे निखारने, हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि एवं प्रेम विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस पत्रिका के सफल संपादन हेतु हिंदी विभाग के सभी शिक्षकों का योगदान सराहनीय है।

हेमलता राठौर
हिन्दी विभागाध्यक्षा

संपादिका की कलम से



सादर नमस्कार!

शब्द केवल भावों की अभिव्यक्ति नहीं होते, वे मन के भीतर जन्म लेने वाले विचारों को एक पहचान भी देते हैं। जब किसी बालमन की कल्पना शब्दों का रूप लेती है, तब एक छोटी-सी अनुभूति भी अर्थपूर्ण सृजन में बदल जाती है। इन्हीं कोमल भावनाओं, कल्पनाशील विचारों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का सुंदर संसार है हमारी ई-पत्रिका "उन्मुक्त : विचारों की उड़ान"।

यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की कल्पना, संवेदना, जिज्ञासा और आत्मविश्वास का प्रतिबिंब है। प्रत्येक रचना के पीछे एक विचार है, प्रत्येक विचार के पीछे एक अनुभव है और प्रत्येक अनुभव में सीखने की एक नई संभावना छिपी है।

विद्यालय वह धरातल है जहाँ प्रतिभाओं को दिशा मिलती है और सपनों को आकार। हमारे विद्यार्थियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से कभी प्रकृति को महसूस किया है, कभी जीवन के सुंदर पक्षों को शब्द दिए हैं, तो कभी अपनी कल्पनाओं के नए आकाश रचे हैं। उनकी रचनाओं में दिखाई देती मौलिकता और सहज अभिव्यक्ति इस पत्रिका को विशेष बनाती है।

"उन्मुक्त" नाम अपने आप में एक संदेश है—विचारों को सीमाओं में बाँधने के बजाय उन्हें उड़ान दी जाए। क्योंकि स्वतंत्र चिंतन ही सृजन का प्रथम चरण है और सृजन ही व्यक्तित्व को नई पहचान देता है।

आइए, शब्दों की इस यात्रा में साथ चलें और देखें कि जब विचारों को आकाश मिलता है, तो कल्पनाएँ कितनी दूर तक उड़ सकती हैं।

सृजन की यह उड़ान निरंतर बनी रहे,
कल्पनाओं का यह आकाश सदैव विस्तृत होता रहे।

सादर,
आरती व्यास
संपादिका

अनुक्रमणिका

1	काव्य-मंजूषा
2	नन्ही कलम,बड़े विचार
3	क्रियात्मक गतिविधियाँ
4	स्याही में सजे ख़्वाब
5	लेखनी की उड़ान
6	क्रियात्मक गतिविधियाँ
7	गुरु-हृदय की अभिव्यक्ति

काव्य-मंजूषा

प्रार्थना

वंदन करते हैं भगवान आप को,
हम हृदय के तारे हैं आप के।
वंदन करते...

शक्ति दो हमें लड़ने की मुश्किलों से,
पढ़-लिखकर आगे बढ़ें मेहनत से।
वंदन करते...

ब्रह्मांड के राजा, सबके दाता,
बजाता रहूँ आपके नाम का बाजा।
वंदन करते...

कठपुतली हैं हम आपकी,
उबार दो हमें यह जग से।
वंदन करते...

दर्शन ठक्कर-4 ई

रब = ईश्वर

मुझ में रब है,
तुझ में रब है,
हम सब में रब है-(2)
बादल की गरज में रब,
बारिश की बूँद में रब,
सूरज की रोशनी में रब,
चाँद की चमक में रब,
फूलों की हँसी में रब,
तितली की झड़प में रब,
परिंदे की चहक में रब,
रब है तो सब है,
मुझ में रब, तुझ में रब,
हम सब में रब है-(2)

हमदान दारुवाला-4 ड



मेरा स्कूल



मेरा स्कूल है कितना सुन्दर,
सभी बच्चे हैं एक से एक धुरंधर।
डीपीएस की है बात निराली,
खुशी-खुशी से टीचर हमें पढ़ाती।
निरंतर हमारा भविष्य वे सँवारती
पढ़ना-लिखना, खेलना-कूदना,
उद्देश्य है सब में आगे रहना।
ऐसा है स्कूल मेरा,
डीपीएस से है भविष्य सुनहरा।

बानी शर्मा-3 ब



मेरी मम्मी

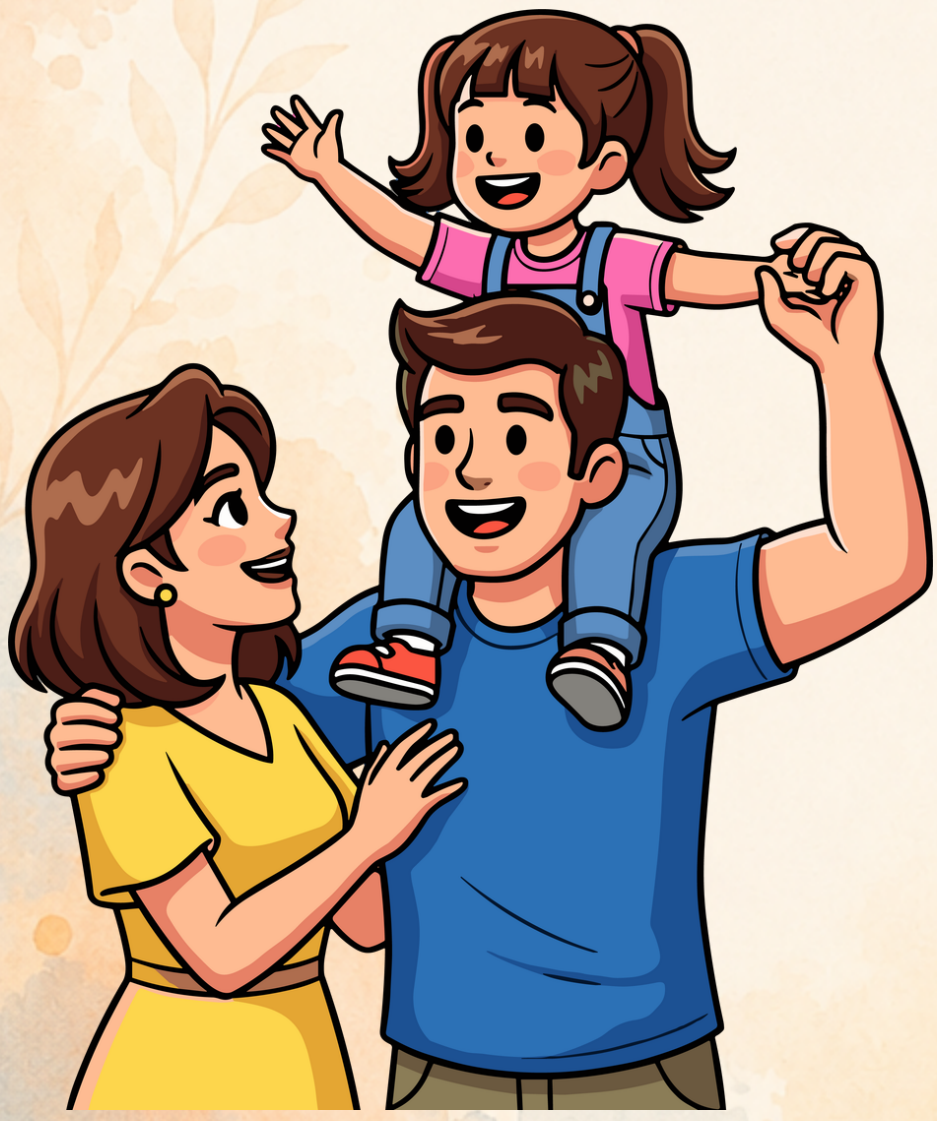
मम्मी मेरी सुंदर हैं।
रोज़ सुबह उठ जाती हैं।
फिर वह मुझे उठाती हैं।
खाना तभी खिलाती हैं।
बस में वही बिठाती हैं।
मम्मी सबसे प्यारी हैं।

कृति अग्रवाल-1 ई

मेरे पापा

मेरे पापा सबसे प्यारे,
मस्ती करते ढेर सारे।
सुबह से शाम तक काम करते,
थके हुए घर वापस आते।
चॉकलेट लाने का वादा करते,
घर आते-आते भूल जाते।

मम्मी बोले "पढ़ाई कर लो",
पापा बोले "थोड़ा खेल लो" ।
मम्मी बोले "जल्दी सो जाओ",
पापा बोले" कार्टून लगाओ"।
टीवी देखते सो जाते,
खर्राटे भी खूब लगाते।



फिर भी पापा सबसे प्यारे,
मुझे सिखाते सही रास्ता,
सच बोलना और अच्छा बनना।
जब भी डर लगता है मुझको,
पापा साथ खड़े रहते हैं।
उनका प्यार है सबसे खास,
पापा हैं मेरे दिल के पास।

अदिति राज- 2 ई

बारिश आई!



दूर देश से बादल आए ,
काले-काले बादल छाए ।
ठंडी-ठंडी हवा चली ,
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई ।
झूम उठे खुशी से हम,
बारिश आई छम-छम-छम।

नदी तालाब में भर गया पानी,
खेत खलिहान हुए पानी - पानी।
धरती हुई हरी-भरी,
चारों ओर हरियाली छाई।
फूल खिले मुस्कान लिए,
चिड़िया चहके डाली-डाली ।

मेढक बोले टर्र-टर्र- र्र ,
मोर नाचे छम-छम-छम ।
काले बादल घिर-घिर आए ,
गरज-गरज कर गीत सुनाए ।
बारिश आई प्यारी - प्यारी
सबको लगती सबसे प्यारी ।

हम बच्चे बारिश में खेलें,
कागज़ की नाव पानी में चलाएँ।
चमके बिजली, गरजे बादल,
डर से भागे बच्चे सारे।
माँ की गोद में जा छुप जाते,
बारिश आई, बारिश आई।



अभिनव राज-3 ई

माँ की ममता

माँ की ममता, माँ का प्यार,
झूठा है सारा संसार।
गोद उठाती लोरी गाती,
पहले खाना हमें खिलाती।
करती पल-पल हमें दुलार,
माँ की ममता, माँ का प्यार।।

माँ की आँखों के तारे हम,
घर के राजदुलारे हम।
मीठे सुर में रही पुकार,
माँ की ममता, माँ का प्यार।

दूर नहीं है रहने देती,
आँसू नहीं है बहने देती।
करे खिलौनों की भरमार,
माँ की ममता, माँ का प्यार।

कौन है जग में, माँ के जैसा,
सोना-चाँदी रुपया-पैसा।
उसके आगे सब बेकार,
माँ की ममता, माँ का प्यार।



आरव राय-3 जी

साधन या खतरा

इस दुनिया के हर कोने में है एक ऐसा यंत्र,
आओ तुमको बताऊँ इससे बचने का एक मंत्र।
बड़ों के लिए वरदान है लेकिन बच्चों तुम सँभलना,
तुम ना छूना ज़्यादा इसको ना इसके लिए मचलना।
यूँ तो इस यंत्र का है प्यारा सा एक नाम,
चुटकी में ही कर देता ये सबके सारे काम।
पर जिसने भी बिना आज्ञा इसकी आदत लगाई,
फिर तो उसके पास कोई जीत कभी न आई।
छीना सबका बचपन इसने छीनी सबकी स्माइल,
सही समझे आप सभी नाम है इसका मोबाइल।
बच्चों रहना दूर इससे जब तक न हो जाओ बड़े,
नही मिलती कोई जीत उसे जो इसे पाने को अड़े।
जितना दूर यह यंत्र है तुमसे, कामयाबी पास बुलाए,
फिर समझ के साथ तुमको आगे बढ़ना सिखाए।



श्रव्या शर्मा-4 ई

मेरी इच्छा – चाँद की यात्रा

मन करता है इस जीवन में,
काश एक दिन ऐसा पाऊँ।
चंद्रयान पर बैठकर,
काश मैं चाँद पर जाऊँ।।



जाते-जाते हरियाली से,
सजी पृथ्वी को निहारूँ मैं।
नीले अम्बर की ऊँचाइयों से,
उसका रूप सँवारूँ मैं।।

चंदामामा को हाथ लगाकर,
ढेरों बातें कर आऊँ।
उनके संग चंद्रलोक का,
कोना-कोना घूम आऊँ।।

तारों की उस सुंदर नगरी में,
सपनों के दीप जलाऊँ।
चाँद की ठंडी चाँदनी लेकर,
धरती पर वापस आऊँ।।

जब पृथ्वी पर लौटूँ फिर मैं,
सबको कथा सुनाऊँ।
चाँद-सितारों की अद्भुत दुनिया,
सारे जग को बतलाऊँ।।

फ्रेया गज्जर-5 जे



रंगों में खुशी

हर रंग मुस्काता है, हर रंग कुछ कहता है।
हर रंग खुशियों का, हर पल साथ रहता है।

नीला ऊँची उड़ान का, हरा लहराते खेतों का।
सफ़ेद मन की सच्चाई का, केसरिया अभिमान का।

गुलाबी हँसी बच्चों की, बैंगनी सपनों की दुनिया।
भूरी अपनी प्यारी मिट्टी, जिससे महके सारी बगिया।

जब काले बादल छा जाते, सूरज भी छिप जाता है।
बारिश की रिमझिम बूँदों से, धरती का मन मुस्काता है।

फिर नभ में इंद्रधनुष खिलता, सातों रंग सज जाते हैं।
जैसे मिलकर सारे बच्चे, खुशियों के गीत सुनाते हैं।

आओ मिलकर रंग बिखेरें, प्यार सभी में बाँटें हम।
रंगों जैसी सुंदर दुनिया, मिल-जुलकर फिर बनाएँ हम।

हर रंग मुस्काता है, हर रंग कुछ कहता है।

आद्या श्रीवास्तव-5 आई

रक्षाबंधन

रेशम का धागा
और प्यार का बंधन,
आया है पावन
ये राखी का सावन।

बहन सजाती है
सुंदर थाली,
भाई के चहरे
पर छाई खुशाली।

कलाई पर बंधता है
ये जब धागा,
भाई का सोया
भाग्य है जागा।

मिठाई की मिठास
और भाई का वादा,
रक्षा का संकल्प
है सबसे ज्यादा।



वेदांशी मिश्रा-5 एच

नन्ही कलम,
बड़े विचार

मेरी अविस्मरणीय रेल यात्रा

इस बार मेरी गर्मी की छुट्टियाँ बहुत विशेष थीं क्योंकि मैंने नीलगिरी पर्वतमाला में चलने वाली विश्व धरोहर टॉय ट्रेन की यात्रा की। इसका निर्माण 100 साल पहले अंग्रेज़ों के समय शुरू हुआ था। यह रेलगाड़ी अपने विशेष भाप इंजन तकनीक और ऐतिहासिक महत्त्व के कारण प्रसिद्ध है। वर्ष 2005 में इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर का दर्जा दिया गया।

मैंने कुन्नूर से ऊटी तक की यात्रा की। यह यात्रा मेरे जीवन के सबसे सुंदर अनुभवों में से एक है। रेलगाड़ी की लकड़ी की सीटें और बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ देखकर ऐसा लगा मानो मैं इतिहास के किसी सुनहरे दौर में पहुँच गया था। जैसे ही इंजन ने सीटी बजाई और गार्ड ने हरी झंडी दिखाई, रेलगाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। मेरी ख़ुशी का ठिकाना न था। रेलगाड़ी कई सुरंगों, पुलों और घुमावदार पटरियों से होकर गुजरी। खिड़की से दिखाई देने वाले चाय के हरे-भरे बागान, घने जंगल, कल-कल बहते झरने और धुंध से ढके नीलगिरि पर्वत किसी चित्रकार की सुंदर पेंटिंग जैसे लग रहे थे। ठंडी हवा के झोंके यात्रा को और भी आनंददायक बना रहे थे। मैंने प्राकृतिक दृश्यों की अनेक सुंदर तस्वीरें खींची। पॉपकॉर्न खाते-खाते कब ऊटी आ गया, पता ही नहीं चला।

यह रेल यात्रा मेरे जीवन की सबसे सुंदर, यादगार और अद्भुत यात्राओं में से एक है। इस यात्रा ने मुझे प्रकृति की अद्भुत सुंदरता और भारत की समृद्ध विरासत से परिचित कराया। यह यात्रा मेरी सबसे प्रिय स्मृतियों में बनी रहेगी।

प्रियांश श्रीवास्तव- 4 डी

बूझो तो जानें



प्रश्न: ऐसी वस्तु जिसके पास दाँत है पर खा नहीं सकता?

उत्तर: कंघा।

प्रश्न: एक लड़का छतरी लेकर बाज़ार गया वह जब घर वापस आया तब छाता गीला नहीं था?

उत्तर: बारिश ही नहीं थी।

प्रश्न: मेरे पास पेन है पर वह चलता नहीं है?

उत्तर: उसके पास पैर नहीं है।

प्रश्न: कमरे में राहुल, मायरा और एक केला है, पर हाथी उस केले को नहीं खा सकता, बताओ क्यों?

उत्तर: क्योंकि वहाँ हाथी है ही नहीं।

प्रश्न: ऐसी क्या चीज़ है जिसका सिर और पूँछ होती है पर शरीर नहीं होता-

उत्तर: सिक्का

प्रश्न: ऐसी क्या चीज़ है जो जागने पर ऊपर रहती है और सोने पर गिर जाती है?

उत्तर: पलकें

प्रश्न: ऐसी क्या चीज़ है जो खुद गीली हो जाती है पर दूसरों को सुखाती है?

उत्तर: तौलिया



आरुष पटेल-4 एफ

रूस और भारत में मेरा जीवन....

मेरा जन्म 2016 में इंदौर में हुआ था। मेरा परिवार अंतरराष्ट्रीय है : मेरे पिता भारतीय हैं और मेरी माँ रूसी हैं। इसलिए मैं रूस और भारत में रहा।

मैं आपको अपने देशों के लोगों के जीवन में आए अंतर के बारे में बताना चाहता हूँ। भारत में, जलवायु आरामदायक और गर्म है। मेरी माँ आर्कटिक क्षेत्र, याकूतिया से हैं। वहाँ हमेशा ठंड रहती है। सर्दियों में, तापमान 50 डिग्री तक गिर जाता है।

रूस में लगभग सभी परिवारों के पास एक बिल्ली होती है। मेरी माँ के माता-पिता के पास भी एक बिल्ली थी, मैरीसिया। वह मेरी सबसे पसंदीदा पालतू जानवर है।

भारत में मसाले तो बहुत होते हैं, और मौसमी सब्ज़ियाँ भी। रूस में लोग चाय और कॉफ़ी के बहुत शौकीन हैं और अक्सर इन्हें पानी की तरह, बिना दूध और चीनी के पीते हैं।

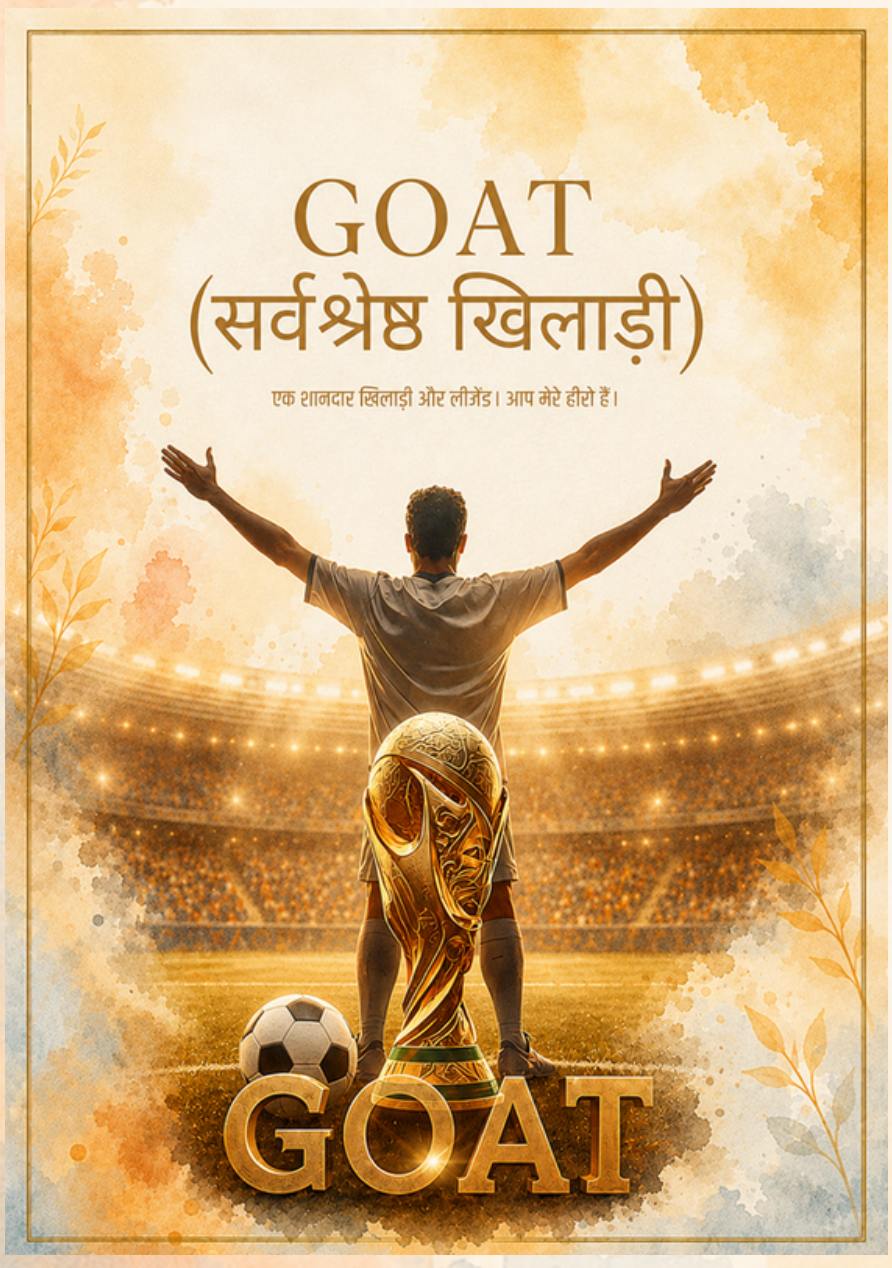
भारत में मुख्य अवकाश दिवाली है और रूस में नव वर्ष। रूढ़िवादी चर्च कैलेंडर के अनुसार, रूस में क्रिसमस 7 जनवरी को मनाया जाता है।

रूस और भारत मित्र हैं!

गवरील जोशी-5 स

क्रिस्टियानो रोनाल्डो

एक शानदार खिलाड़ी और लीजेंड। आप मेरे हीरो हैं। आपने हमें सिखाया कि जुनून के बिना टैलेंट का कोई मतलब नहीं है। मैंने एक आम इंसान को इतनी कड़ी मेहनत करते और हमेशा के लिए यादगार बनते देखा है। उन्होंने कहा कि बीता हुआ कल बीत चुका है, वर्तमान में जियो क्योंकि यही सबसे अच्छा तोहफ़ा है। उनके छह वर्ल्ड कप और आखिरी मैच की वो सीटी हमेशा दिल में बसी रहेगी। लीजेंड्स की पहचान सिर्फ़ जीती हुई ट्रॉफ़ी से नहीं, बल्कि उन लाखों लोगों से होती है जिन्हें वे प्रेरित करते हैं। उनकी विरासत कभी फीकी नहीं पड़ेगी। आपके जुनून को सलाम, 'GOAT' (सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी)। वो रात दर्दनाक थी, लेकिन दिल गर्व से भरा था; 'GOAT', हम आपसे प्यार करते हैं और फ़ुटबॉल के लिए हमें प्रेरित करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। हम आपको हमेशा एक लीजेंड के तौर पर याद रखेंगे।



मानव शाह -5 ग

शीर्षक- सूरज की शक्ति, अब ट्रेन की रफ्तार!

हर सुबह सूरज हाइड्रोजन की शक्ति से पूरी दुनिया को रोशनी और गर्मी देता है। क्या आपने कभी सोचा है कि यही हाइड्रोजन किसी ट्रेन को भी चला सकती है? सुनने में यह किसी जादू जैसा लगता है, लेकिन यह सच है। सूरज न्यूक्लियर फ्यूज़न नामक प्रक्रिया से ऊर्जा बनाता है, जबकि वैज्ञानिक हाइड्रोजन फ्यूल सेल की मदद से हाइड्रोजन को बिजली में बदलकर ट्रेन चलाते हैं। डीज़ल ट्रेनों के विपरीत, हाइड्रोजन ट्रेन से सिर्फ जलवाष्प और बहुत कम मात्रा में ऊष्मा निकलती है। यही कारण है कि दुनिया के कई देश इसे भविष्य के स्वच्छ और टिकाऊ परिवहन के रूप में अपना रहे हैं।

हाइड्रोजन ट्रेनों की शुरुआत वर्ष 2018 में जर्मनी से हुई, जब दुनिया की पहली व्यावसायिक हाइड्रोजन ट्रेन कोराडिया आईलिंट यात्रियों के लिए शुरू की गई। इसके बाद जापान, चीन, फ्रांस, इटली, दक्षिण कोरिया, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका जैसे देशों ने भी इस तकनीक पर काम शुरू किया। अब भारत ने भी वर्ष 2026 में अपनी पहली स्वदेशी हाइड्रोजन ट्रेन तैयार की है। यह ट्रेन हरियाणा के जींद–सोनीपत रेल मार्ग पर चलेगी। यह उपलब्धि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन और आत्मनिर्भर भारत के विज़न को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जाती है। लेकिन बिना डीज़ल के ट्रेन चलती कैसे है? इस ट्रेन में विशेष टैंकों में संपीड़ित हाइड्रोजन गैस भरी जाती है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण भाग प्रोटॉन एक्सचेंज मेम्ब्रेन फ्यूल सेल है, जिसे आप एक छोटे बिजलीघर की तरह समझ सकते हैं। इसमें हाइड्रोजन, हवा की ऑक्सीजन से एक विशेष PFSA मेम्ब्रेन की सहायता से मिलती है। इस प्रक्रिया में हाइड्रोजन प्रोटॉन और इलेक्ट्रॉन में बँट जाती है। इलेक्ट्रॉन तारों से होकर बहते हैं और बिजली बनाते हैं, जिससे ट्रेन के मोटर चलते हैं। इसमें हाइड्रोजन, हवा की ऑक्सीजन से एक विशेष PFSA मेम्ब्रेन की सहायता से मिलती है।

इस प्रक्रिया में हाइड्रोजन प्रोटॉन और इलेक्ट्रॉन में बँट जाती है। इलेक्ट्रॉन तारों से होकर बहते हैं और बिजली बनाते हैं, जिससे ट्रेन के मोटर चलते हैं। दूसरी ओर, प्रोटॉन ऑक्सीजन से मिलकर जलवाष्प बनाते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में धुआँ या हानिकारक गैसें नहीं निकलतीं। हाइड्रोजन में लगभग 120 MJ/kg ऊर्जा होती है, जो डीज़ल से लगभग तीन गुना अधिक है। इसलिए इसे भविष्य का एक शक्तिशाली और स्वच्छ ईंधन माना जाता है।

भारत की इस अत्याधुनिक हाइड्रोजन ट्रेन में 10 डिब्बे हैं और यह लगभग 2,600 यात्रियों को ले जा सकती है। इसमें 1200 kW का Hydrogen Fuel Cell System लगा है और इसकी अधिकतम गति 75 किलोमीटर प्रति घंटा है। यह ट्रेन जींद जंक्शन से सोनीपत के बीच चलेगी। इसके लिए जींद (हरियाणा) में देश का सबसे बड़ा हाइड्रोजन स्टोरेज और रीफ्यूलिंग स्टेशन बनाया गया है, जहाँ लगभग 3,000 किलोग्राम हाइड्रोजन सुरक्षित रखी जा सकती है। ट्रेन में (LFP) बैटरियाँ भी लगी हैं, जो अतिरिक्त बिजली संचित करके आवश्यकता पड़ने पर ट्रेन को लगातार शक्ति देती हैं। हाइड्रोजन बहुत ज्वलनशील (जल्दी आग पकड़ने वाली) गैस है, इसलिए सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा गया है। ट्रेन में हाइड्रोजन लीकेज डिटेक्टर, फ्लेम डिटेक्टर, हीट और स्मोक सेंसर, ऑटोमैटिक वेंटिलेशन सिस्टम तथा इमरजेंसी शट-ऑफ सिस्टम लगाए गए हैं। रीफ्यूलिंग स्टेशन NFPA-2 और ISO 19880 Series जैसे अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मानकों का पालन करता है। किसी भी प्रकार का रिसाव होने पर सिस्टम तुरंत हाइड्रोजन की आपूर्ति बंद कर देता है और प्रशिक्षित इंजीनियर इसकी लगातार निगरानी करते हैं। भारत की पहली हाइड्रोजन ट्रेन केवल एक नई रेल नहीं, बल्कि विज्ञान, नवाचार और स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में बढ़ाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। आने वाले समय में (PEMFCs), LFP बैटरियों और हाइड्रोजन तकनीक में और सुधार होने पर यही तकनीक बसों, ट्रकों, जहाज़ों और हवाई जहाज़ों में भी इस्तेमाल की जा सकेगी। हाइड्रोजन जैसे स्वच्छ ईंधन का उपयोग करके हम प्रदूषण कम कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ, हरित और विकसित भारत का निर्माण कर सकते हैं।

ईशान्वी व्यास-5 आई

खुद पर भरोसा रखें

अर्जुन नाम के एक नौजवान का सपना था कि वह एक कामयाब मूर्तिकार बने। वह रोज़ पत्थर से मूर्तियाँ बनाता था, लेकिन कोई उन्हें खरीदता नहीं था। महीने बीतते गए और साल गुज़र गए। उसके दोस्तों को अच्छी नौकरियाँ मिल गईं और वे पैसे कमाने लगे, जबकि अर्जुन अपनी छोटी सी वर्कशॉप में काम करता रहा। कई लोगों ने उससे कहा कि वह यह काम छोड़ दे और कुछ ज़्यादा व्यावहारिक काम करे। निराश होने के बावजूद, उसने हार नहीं मानी। उसका मानना था कि हर मूर्ति उसे पहले से बेहतर बना रही है। एक दिन, एक बुज़ुर्ग यात्री उसकी वर्कशॉप में आया और उसने कोने में रखी एक खूबसूरत मूर्ति देखी। उसकी कारीगरी देखकर यात्री हैरान रह गया; उसने मूर्ति खरीद ली और अर्जुन के काम के बारे में दूसरों को बताया। जल्द ही, और भी लोग उसकी मूर्तियाँ देखने आने लगे। अलग-अलग शहरों से ऑर्डर आने लगे। सालों बाद, अर्जुन देश के सबसे सम्मानित मूर्तिकारों में से एक बन गया। जब एक युवा छात्र ने उससे उसकी कामयाबी का राज़ पूछा, तो अर्जुन मुस्कुराया और बोला, "कामयाबी और नाकामी के बीच बस इतना ही फ़र्क था कि जब मुझे लगा कि मुझे छोड़ देना चाहिए, तब भी मैंने एक दिन और काम किया।

रिशित महतो -5 एच

क्रियात्मक गतिविधियाँ

क्रियात्मक गतिविधियाँ छात्रों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ विषयवस्तु को दैनिक जीवन से जोड़ते हुए एक नया आयाम प्रदान करती हैं।

1. चींटी कविता की गतिविधि से छात्रों ने परिश्रम, धैर्य और निरंतर प्रयास के महत्व को समझते हुए उसे अपने जीवन में आत्मसात करने की ओर कदम बढ़ाए।

2.'न्याय की कुर्सी' पाठ के नाटकीकरण के दौरान छात्र न्याय, सत्य एवं निष्पक्षता के महत्व को समझते हुए तर्कपूर्ण ढंग से अपने विचार व्यक्त कर पाए।

3 विभिन्न राज्यों की प्रस्तुति/जीवंत झाँकी के माध्यम से छात्र भारत की सांस्कृतिक विविधता को समझते हुए विभिन्न राज्यों की विशेषताओं को रचनात्मक एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर पाए तथा उनमें 'विविधता में एकता' की भावना विकसित हुई। छात्र भारत के विभिन्न राज्यों की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं को भी समझ पाए। भाषा, वेशभूषा, खान-पान, लोकनृत्य एवं परंपराओं की जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ विविधता में एकता के महत्त्व को समझे। गतिविधि के प्रस्तुतिकरण द्वारा उनमें संप्रेषण कौशल का भी विकास हुआ।

इस तरह गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषा-कौशल, समझ, अभिव्यक्ति, रचनात्मक चिंतन तथा जीवन-मूल्यों का विकास होता है।




बंगाल
CLASS LIST
TIME TABLE
TRANSPORT
WHY AM I PROUD INDIAN


लेंग्चा


TRANSPORT
(Non-Stop)


बंगाल
आपका हार्दिक स्वागत है


CLASS LIST
HOUSE LIST
TRANSPORT


TIME TABLE
CLASS LIST
HOUSE LIST
TRANSPORT





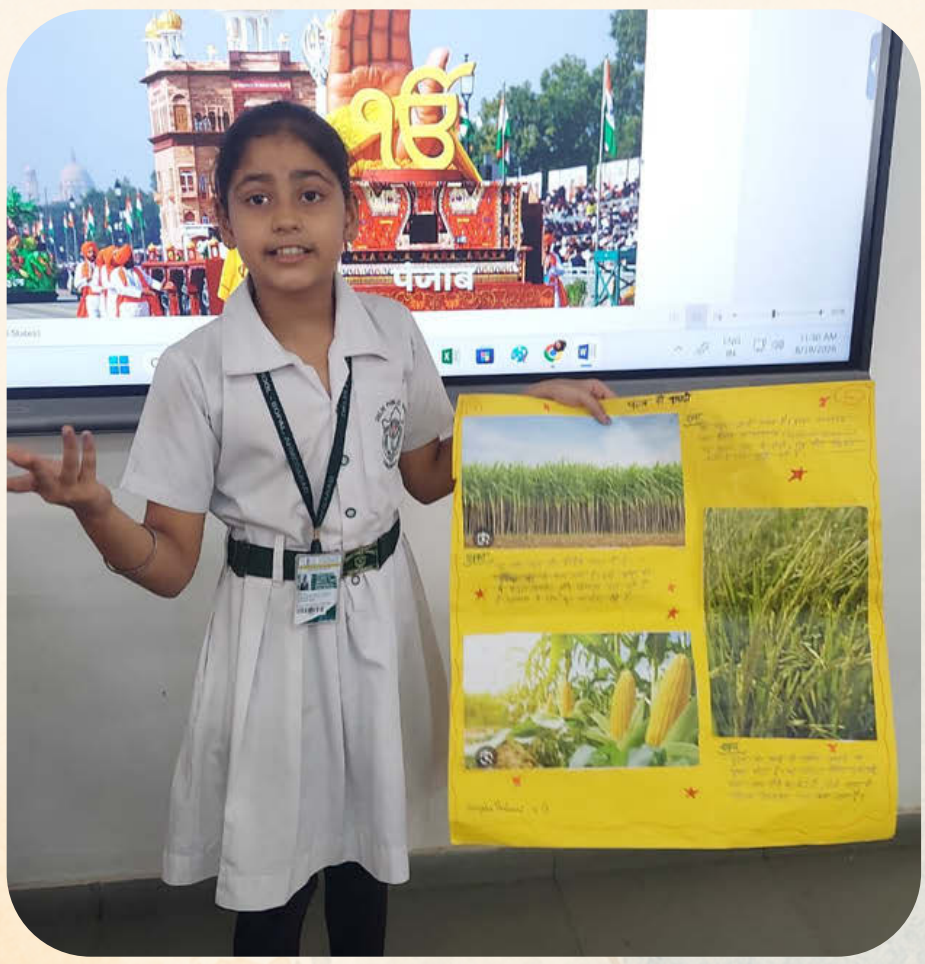

पधारो सा


PUNJAB


पंजाब के त्योहार
पंजाब के कपड़े


together can
BIG


Search
Punjab
clothing
Punjab is a state of colours and crafts.


पंजाब

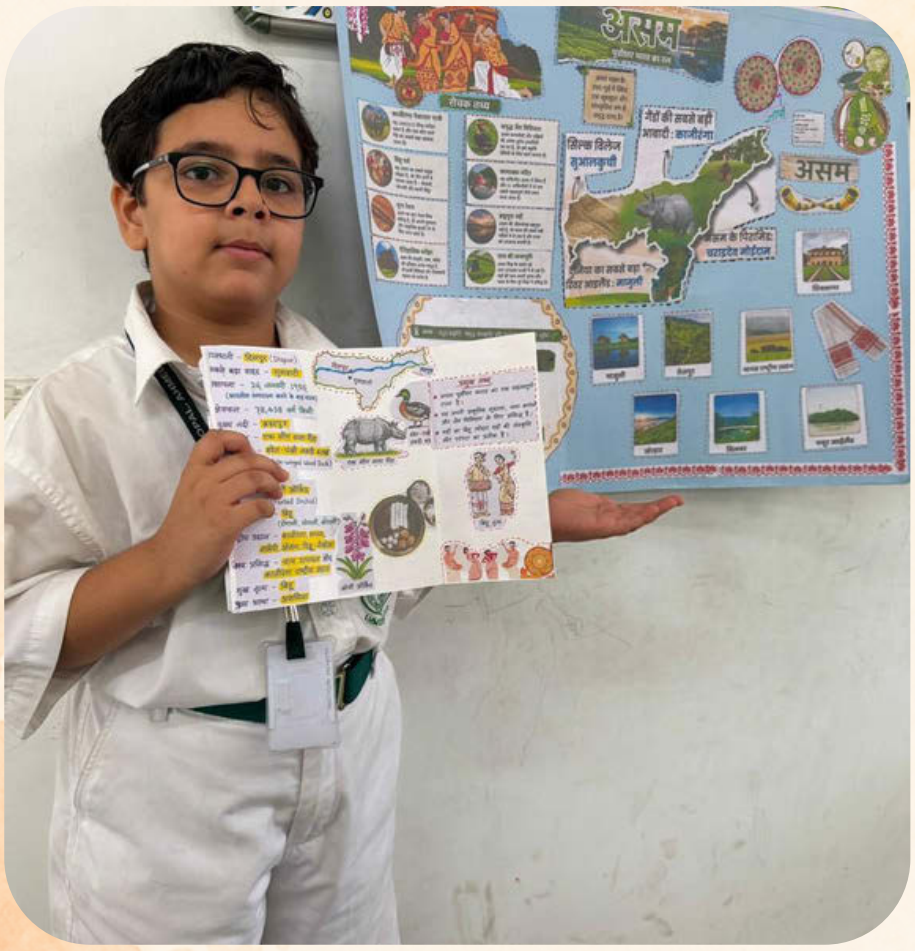

केरल


केरल



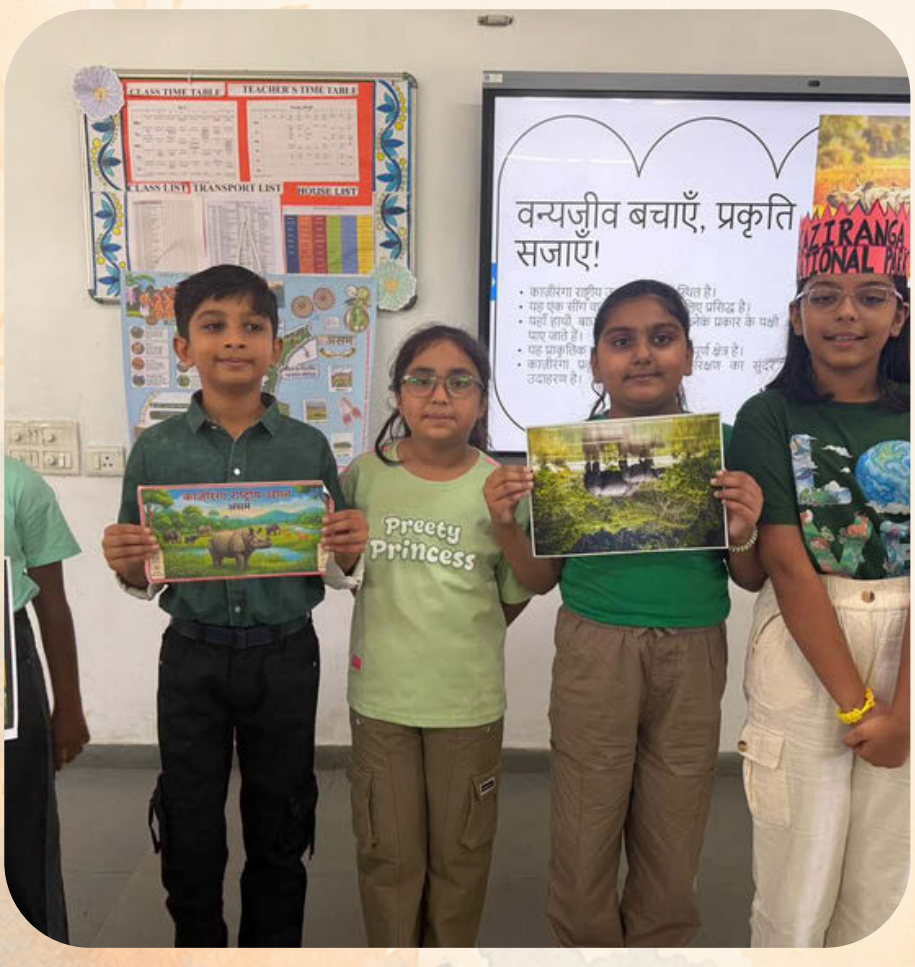



केरल


असम
असम


HOUSE LIST
असम की शान!
असम

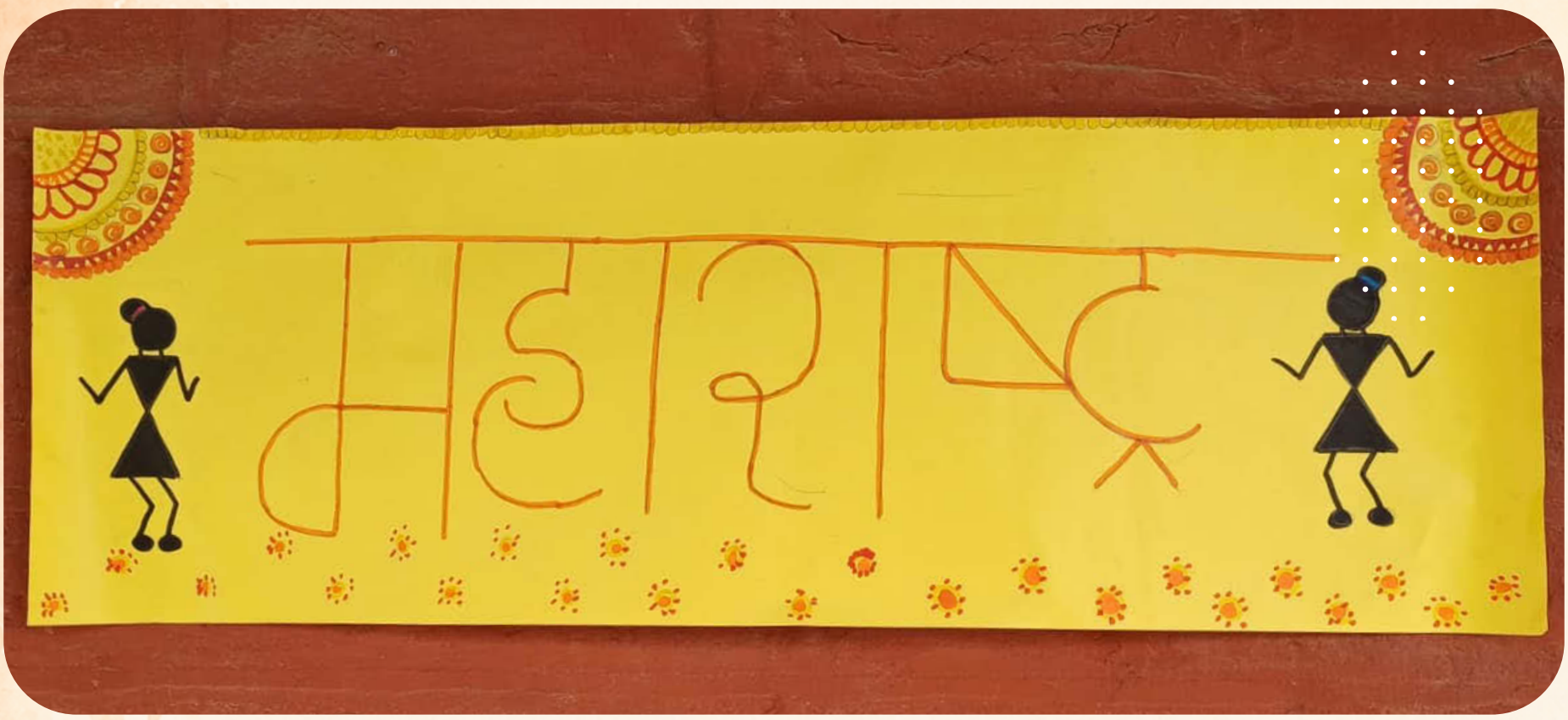

CLASS LIST
TRANSPORT LIST
HOUSE LIST
असम


CLASS TIME TABLE
TEACHER'S TIME TABLE
CLASS LIST
TRANSPORT LIST
HOUSE LIST
असम
वन्यजीव बचाएँ, प्रकृति सजाएँ!
Preety Princess


असम


जय
महाराष्ट्र


त्योहार और संस्कृति
महाराष्ट्र की लोक नृत्य


महाराष्ट्र


जय
महाराष्ट्र


त्योहार और संस्कृति


खुशबू गुजरात की... कुछ दिन तो गुजारो गुजरात में...
गुजरात की पहचान
गुजरात का स्वाद एवं संस्कृति
.... Garvi Gujarat ....
Dwarka - an ancient city
The Statue of Unity - World's tallest statue
Rann of Kutch - massive salt marsh
WHITE DESERT
Heritage & Temples - rich history & Culture
GIR LION
RANN OF KUTCH
MODHERA SUN TEMPLE
GARBA DANDIYA
AMUL DAIRY
PATOLA & BANDHANI
ढोकला
खाखरा
उत्तरायण
लोक संगीत और
हमारी विशेषताएँ
- AMAZING FACTS -
Longest Coastline - 1600 km
Largest Producer of MILK
First State to have Tyotigram Scheme
Rich in Culture, Trade and Entrepreneurship
उद्योग और व्यापार
गुजरात भारत का एक प्रमुख औद्योगिक और व्यापारिक राज्य है।
प्रगति और विकास
नवाचार, तकनीक और परिश्रम से गुजरात हर दिन आगे बढ़ रहा है।
एकता में शक्ति
विविधता में एकता, यही है हमारी असली ताकत।
स्वच्छ एवं हरा-भरा पर्यावरण
Garvi G
Pragati Gu
Sanskriti Gu
गुजरात – जहाँ परंपरा, प्रगति और संस्कृति साथ चलते हैं


Culture of Guj


ltu Gujarat






BIHAR
Pashchim Champaran
Purba Champaran
Sitamarhi
Gopalganj
Sheohar
Madhubani
Siwan
Muzaffarpur
Supaul
Araria
Saran
Darbhanga
Vaishali
Samastipur
Madhepura
Saharsa
Buxar
Bhojpur
Patna
Purnia
Khagaria
Begusarai
Rohtas
Katihar
Jehanabad
Nalanda
Bhagalpur
Sheikhpura
Munger
Aurangabad
Gaya
Nawada
Jamui
Banka





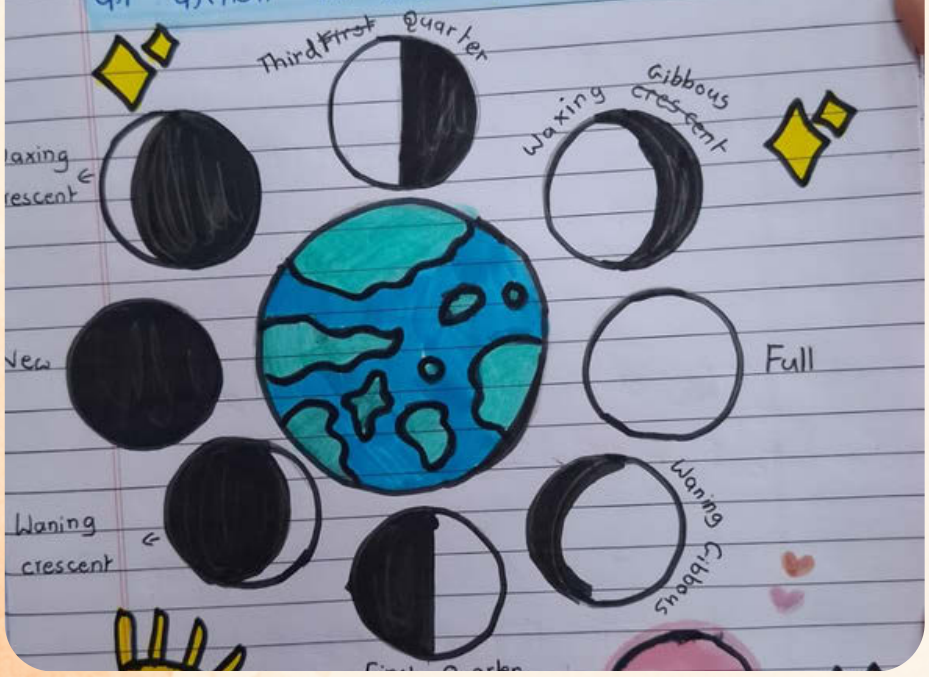

Famous personalities of Bihar
from various fields
Chhath Puja



7/26

क्रियात्मक गतिविधि

"अमावस्या से पूर्णिमा तक' - घटते बढ़ते चाँदु की कलाओं का क्रम दर्शाते हुए चित्र बनाएँ -



त्योहार की जानकारी दी जाएगी।



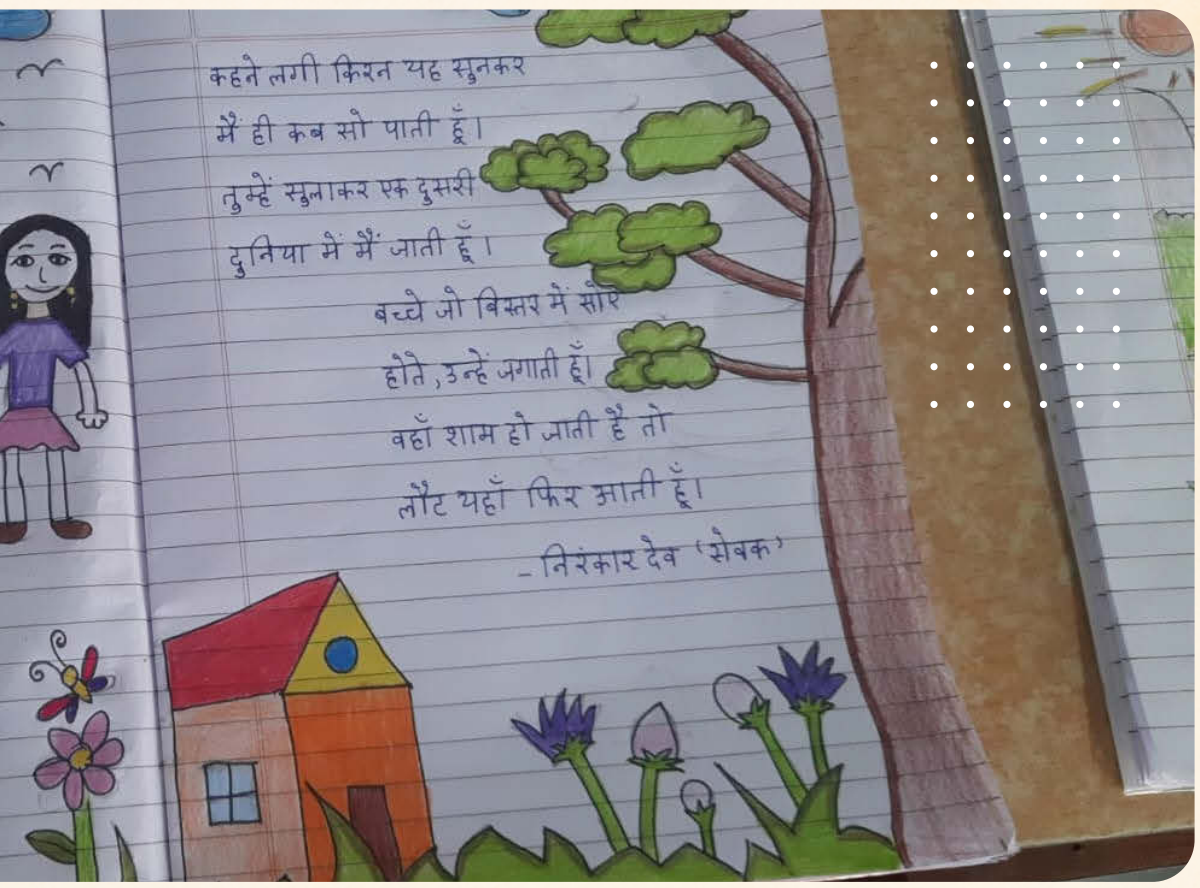
पौषी पुनम

- क्यों मनाया जाता है? यह दिन चंद्रमा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उत्तम माना जाता है। इससे मानसिक शांति और शारीरिक ऊर्जा प्राप्त होती है।
- कब मनाया जाता है? आमतौर पर जनवरी में मनाया जाता है।
- क्या खाया जाता है? फल, दूध, दही, साबूदाना और

16.4.26

किरन

अरी किरन तू उठकर इतनी
जल्दी आज चली आई।
मैं तो बिस्तर में से अपने
अब तक निकल नहीं पाई।
कल तो तेरे साथ शाम तक
खेल बहुत से खेली मैं।
पर जब तू चल दी सोने को
तो रह गई अकेली मैं।
तू सुख से सोई होगी पर
मुझको ~~नींद~~ नींद नहीं आई।
परी कथाएँ पढ़ते-पढ़ते



कहने लगी किरन यह सुनकर
मैं ही कब सो पाती हूँ।
तुम्हें सुलाकर एक दुसरी
दुनिया में मैं जाती हूँ।
बच्चे जो बिस्तर में सोते
होते, उन्हें जगाती हूँ।
वहाँ शाम हो जाती है तो
लौट यहाँ फिर आती हूँ।

- निरंकार देव 'सेवक'






Rayhan's
Garden



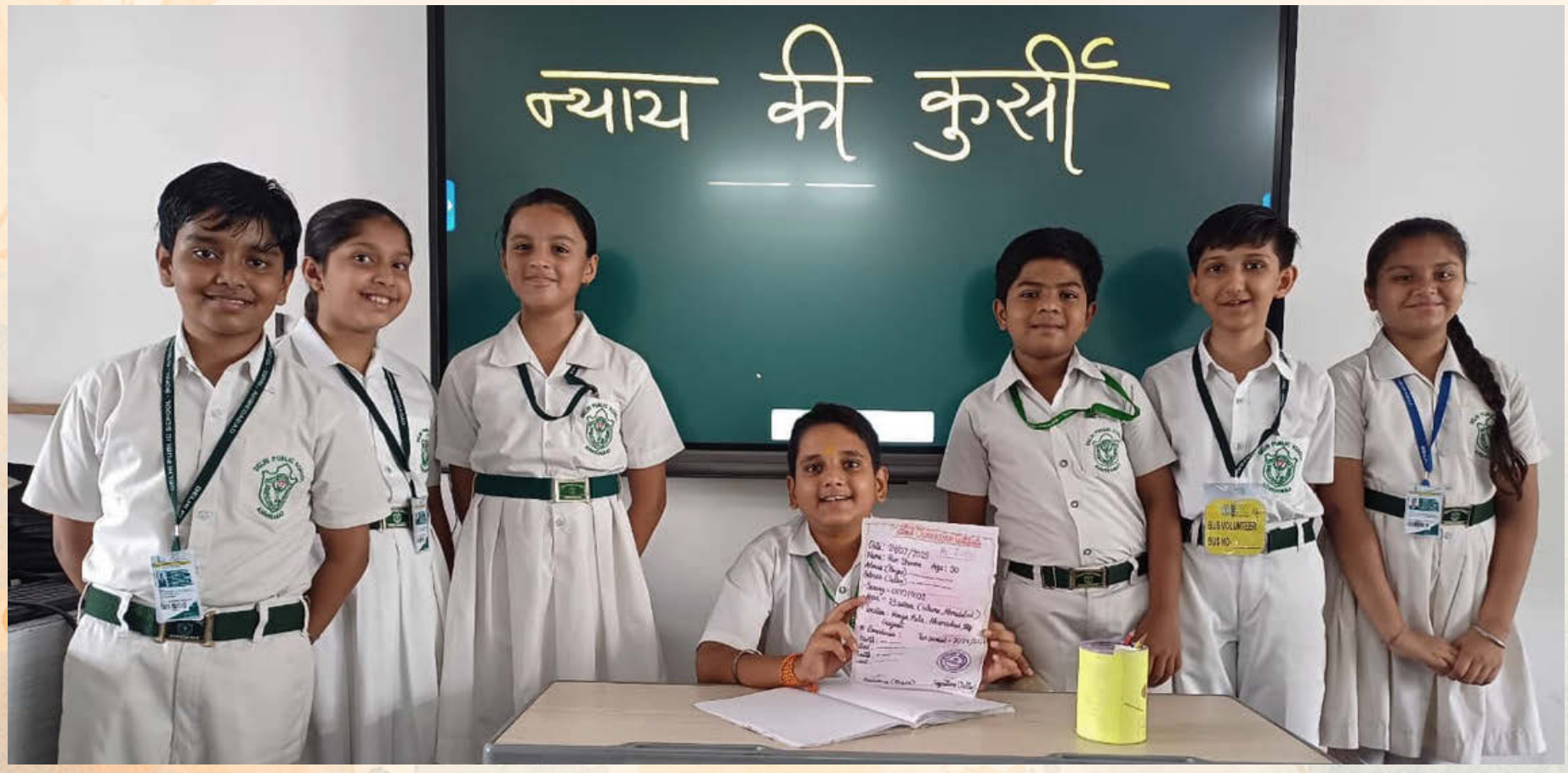

HINDI PROJECT
ANAIT SAINI IV-E

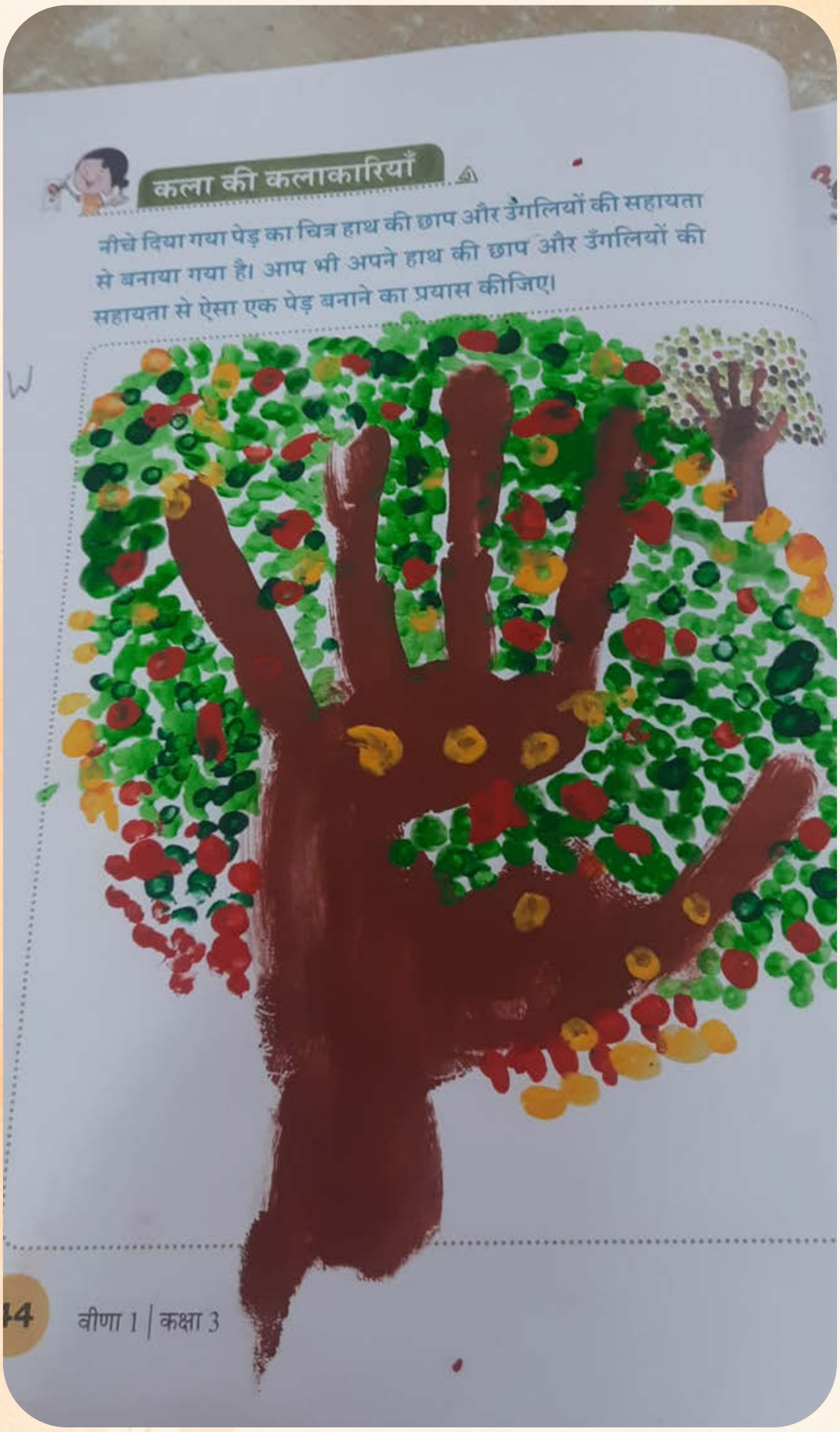


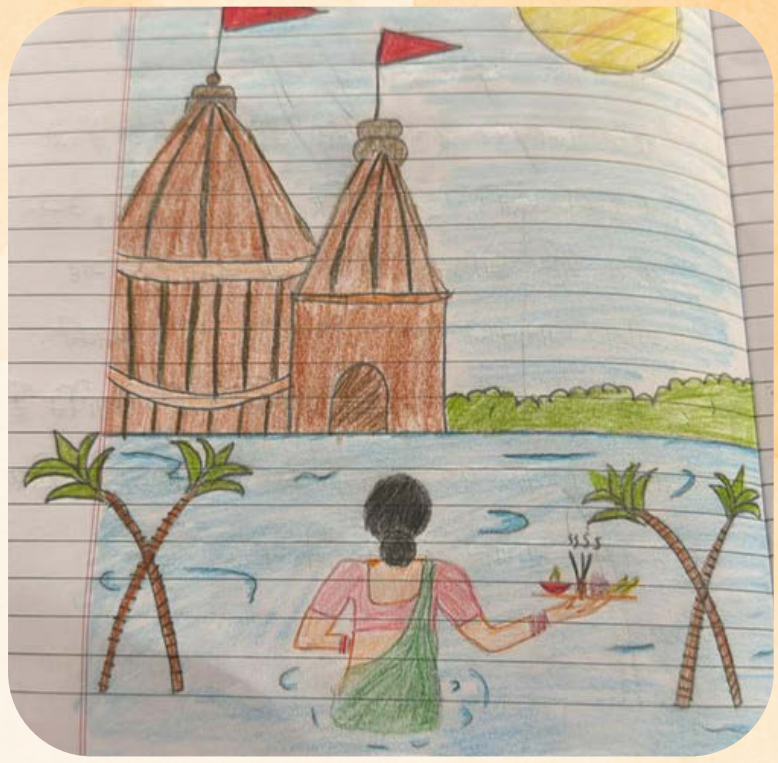

बगीचा
नाम - लक्ष धींग्रा
कक्षा - IV - E


'आसमान गिरा'




न्याय की कुर्सी


कला की कलाकारियाँ
नीचे दिया गया पेड़ का चित्र हाथ की छाप और उँगलियों की सहायता से बनाया गया है। आप भी अपने हाथ की छाप और उँगलियों की सहायता से ऐसा एक पेड़ बनाने का प्रयास कीजिए।
44
वीणा 1 | कक्षा 3






रंगमंच

स्याही में सजे ख़्वाब

त्योहारों का सार

एक था पल।
जब आते थे, त्योहार बार-बार,
मना लो इसे उत्साह के साथ।
वरना आएँगे न कभी आपके हाथ,
लीजिए बड़ों का आशीर्वाद,
मत करिए समय बर्बाद।
जीवन के पल हैं चार।
लाओ खुशियों की फुहार।
मिलकर मनाओ सारे त्योहार,
ये कविता हमें सिखाती है।
जीवन का सार।

जतिन शर्मा-6 जे



हिंदी भाषा, हमारी भाषा

सुनो-सुनो जी सुनो-सुनो,
इस प्यारी-सी बोली को सीखो ।
क से ज्ञ तक सारा ज्ञान है इसमें,
अ से अ: तक की मिठास सीखो न प्यारे ।

पूरे दिन ये बोली गूँजे,
भारत के हर कोने-कोने ।
चाहे दीपावली, होली या नवरात्रे,
हिंदी तो ख़ुशी की बुनियाद बनाए ।

हर घर में जो गाने बजते,
वे हिंदी में ही गाए जाते ।
शेरो-शायरी, ढेरों सारी,
लिखी जाती इस अनोखी बोली में ही ।

तो तुम भी समझो इसका महत्त्व,
जान जाओगे सारा मंतर ।
हँसो, खेलो, ख़ुशी से झूमो,
हिंदी भाषा का उत्सव मनाओ ।



जेनिक्षा निमावत-6 सी

बारिश

बारिश का है मौसम आया,
सब के मन को ये है भाया।
सब ओर छाई हरियाली है,
देखो बारिश आई है।
सब बच्चे कागज़ की हैं नाव चलाते,
बड़े भी देख उन्हें बच्चे बन जाते।
बाग-बगीचे महक हैं जाते,
बच्चे-बूढ़े सब खुश हो जाते।

किशा जैन-6 के

बारिश

बारिश का मौसम है आया
सबके चेहरों पर मुस्कान है लाया।
'छू' हो गई गर्मी सारी,
बच्चे मिलकर मारें किलकारी।
बच्चे कागज़ की नाव चलाएँ,
छप-छप नाचें मोर सारे।
बाग-बगीचे महक-महक जाते हैं,
बच्चे-बूढ़े खुश हो जाते हैं।
आओ हम सब भी मिलकर झूमें,
खुशी मनाएँ,
बारिश का आनंद हम सब उठाएँ।

देवना शाह-7 अ



नारी

नारी सबसे प्यारी है, दुनिया की राजदुलारी है।
वह नहीं अबला नारी है, दुनिया पर भारी है।
किसी भी क्षेत्र में वह पीछे नहीं,
चाहे पर्वत पर झंडा फहराने से लेकर देश को चलाने की बारी हो।
वह मायके का अभिमान है,
तो ससुराल की शान भी है।
वह सरस्वती और लक्ष्मी का सुंदर रूप है,
लेकिन जब बात उसके स्वाभिमान की है,
तो वही काली और दुर्गा का भीष्म रूप है।
ज़िम्मेदारियों का जूड़ा बाँधे सिर पर, रहती हरदम वह तैयार।
बच्चों के लिए टीचर है, तो सास-ससुर के लिए है डॉक्टर।
वह छोटा सा गूगल है, वह है सुपर कंप्यूटर।
हर समस्या का समाधान है नारी के पास,
वह कभी नहीं खोती अपनी आस।
नारी सबसे प्यारी है, दुनिया की राजदुलारी है।

यशवी गौतम-7 ई



मेरा विद्यालय-
मेरा शान।

मेरा विद्यालय मेरा शान ,सब बच्चे गाते इसका गुणगान।

यह विद्या का आलय है, जहाँ हम बनते हैं विद्वान।

साफ -सफाई और हरियाली ,यह है मेरे विद्यालय की पहचान।

बहुत विशाल, बहुत सुंदर, मेरे विद्यालय का क्रीड़ांगन।

यहाँ के शिक्षक हैं विद्वान ,जो देते हैं हर प्रश्न का निदान।

कंप्यूटर लैब से लेकर पुस्तकालय तक पाते हैं हम ज्ञान ही ज्ञान।

कला सिखाई जाती है हुनर से, खुले मन से हम करते हैं नाच-गान।

तरह -तरह की प्रतियोगिताएँ होती हैं दिन- प्रतिदिन।

जिसमें अव्वल आकर हम बढ़ाते हैं विद्यालय की शान।

समय -समय पर शिक्षक देते हैं शाबाशी और हम बनते हैं उनका अभिमान।

प्राचार्या हमारी हैं कर्तव्यकारिणी ,वो विद्यालय का है स्वाभिमान।

मेरा विद्यालय, मेरा शान, सब बच्चे गाते इसका गुणगान।

यशवी गौतम-7 ई



पापा –
मेरा पहला प्यार

पापा हैं मेरा पहला प्यार, मैं हूँ उनका राजदुलार |
और मैं हूँ उनका बेटा प्यारा, जिस पर वो दें दुनिया वार ||

वह हैं मेरे सबसे अच्छे दोस्त, रोज़ बनाते फ्रेंच टोस्ट |
खेल खेलें, हँसें-गाएँ, एक दूजे को खूब भाएँ ||

मेरे पापा! लाखों में एक, दिल के बहुत ही नेक |
मेरे पापा! मेरी जान, वही तो हैं मेरा जहान ||

हर मुश्किल में ढाल बने वो, थके न कभी, न हारे वो |
जब भी डरूँ, थामें मुझको, अँधकार से तारें वो ||

मेरे लिए उन्होंने सब कुछ किया, हर सपने को साकार किया |
सुख हो या दुःख की हो घड़ी, हरदम मेरा साथ दिया ||

बड़ा जब हो जाऊँगा, बनूँ मैं वैसा, नेक दिलों में हो नाम जैसा |
पापा जैसा सच्चा, प्यारा, हो हर किसी का मैं सहारा ||

मैं कभी न छोड़ूँ आपका हाथ, मैं हमेशा रहूँ आपके साथ |
यही दुआ है, यही है आस, पापा रहें सदा मेरे पास ||

आपका प्यारा बेटा,

जश चड्ढा -7 सी

सूरज निकला

सूरज निकला, चिड़िया बोली,
फूलों ने भी आँखें खोलीं।
आसमान में छाई लाली,
हवा चली सुख देने वाली।

नन्ही-नन्ही किरणें आईं,
फूल हँसे, कलियाँ मुस्काईं।
पेड़ों पर भी पतझड़ छाया,
सबने हिलमिल गीत सुनाया।

-नव्या दीक्षित ,ह्रिदेश दीक्षित





बारिश का सुहाना मौसम

हम जब सुनते बादल कड़कने की गूँजी
छलक उठती है हमारे मन की पूँजी|
बूँदे मानो नाच हैं उठतीं
सुकून है देती मन को भी|

ज़िन्दगी के कष्ट मानो उड़न छू हो जाएँ
जब इस ऋतु का अनुभव आए |
प्यारे-प्यारे पल इस ऋतु में बन जाएँ
जब गरमा-गरम पकौड़ों का हम आनंद उठाएँ |

बारिश की ऋतु में सब बच्चे बन जाएँ
चाहे हो वृद्ध माली या जवान आढ़तिये |
सब बारिश में भीगें और झूमें
कागज़ की नावें डबरे में तैराएँ |

यही है सच्ची ख़ुशी का मतलब
मिट जाए दिल का हर ग़म |
आओ मनाएँ यह ख़ूबसूरत पल
सब साथ मिलकर हम |

जेनिक्षा निमावत-7 सी

मौसम का खेल

आजकल के मौसम में इतना बदलाव,
मानो जैसे खा रहा हो कितने भाव।
अहमदाबाद के लोगों की प्रार्थना थी बारिश के लिए,
टूटा आसमान, बादल बरसते-बरसते आए बाढ़ के लिए।
उसके बाद तो आई ऐसी धूप,
जैसे हम सब पिघल कर बन गए सूप!
फिर हवा इतनी तेज़ चली,
मानो पूरे अहमदाबाद को ले उड़ी।
सारे लोग हो गए परेशान,
स्कूल ऑनलाइन हो गए भैया।
सारे बच्चों को मिला आराम ही आराम!
बड़ों की हालत हो गई पूरी खराब,
पानी जो भर गया, काम करें कैसे जनाब?
पर इसी बहाने हर परिवार हो गया एक साथ,
न जाने कितनी करेंगे सब मिलकर बात।
क्या होगा अब पता नहीं भाई,
पूरे अहमदाबाद में कभी धूप, कभी छाँव है आई।
क्या पता अब कब बदलेंगे हालात,
कब होगी स्कूल में दोस्तों से मुलाकात?
पूरे अहमदाबाद में ऐसा मौसम है छाया,
कि अब तो मच्छरों ने भी अपना घर बसाया!
कहीं बारिश ने हथौड़ा मारा, कहीं बारिश ने फूल खिलाए,
कहीं घरों में पानी भरा, तो कहीं मोरों ने पंख फैलाए।
अब अंत में मेरा इतना ही है कहना,
अंदर ही रहना,
क्योंकि सेहत ही है अपना सबसे अनमोल गहना।

नविष्ठा सनाढ्य-8 के

'राष्ट्रप्रेम'

जब दीप-शिखा मिल जाती है,
जगमग ज्योति हो जाती है।
जब सागर तरंग मिल जाते हैं,
लहरों पर अद्भुत रंग छा जाता है।

जब हवा कहीं गुनगुनाती है,
ऋतु बसंत का आभास हो जाता है।
वृक्षों के अविरल बढ़ने से,
जंगल मदमस्त हो जाता है।

साँसे जब अंदर जाती हैं,
चेहरे पर चमक आ जाती है।
बजते हैं गीते मस्तानों के,
तो मन में उमंग भर जाती है।

आजादी के पथ में है बसी हुई,
सुन्दर संगम सुरतालों की।
रोमांचित मन खिल जाता है, औ'
गीतों में जान आ जाती है।

फड़कती है भुजाएँ, आँखें लाल
सीने में आग जल जाती है।
शोणित भी खुद बहकर,
आज़ादी पाने निकल जाता है।
मन में बुलंदगी, आँखों में चमक,
'राष्ट्रप्रेम' भर जाता है।

-मुकेश कुमार वर्मा
आयकर अधिकारी, अहमदाबाद
पिता - अंशिका वर्मा, कक्षा-9 'डी'

विचारों की उड़ान



हर खोज अचानक नहीं होती,
वह पहले एक छोटे-से विचार के रूप में
मन के किसी कोने में जन्म लेती है।
शुरुआत में वह विचार
सिर्फ़ एक जिज्ञासा लगता है,
लेकिन जब उस पर विश्वास किया जाए,
तो वही नए आविष्कार की नींव बन जाता है।
एक वैज्ञानिक बनने का रास्ता आसान नहीं होता।
कई बार प्रयोग असफल होते हैं,
कई बार उत्तर नहीं मिलते।
फिर भी एक दृढ़ विचार
हर चुनौती के बाद फिर से प्रयास करना सिखाता है।
विज्ञान केवल नई खोज करने के लिए नहीं,
बल्कि देश की सेवा करने का माध्यम भी है।
हर सफल आविष्कार
राष्ट्र को आत्मनिर्भर, सुरक्षित और समृद्ध बनाता है।
एक वैज्ञानिक का हर प्रयास
देश के उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ाया गया कदम होता है।
आख़िर महान वैज्ञानिक
सिर्फ़ प्रतिभा से नहीं बनते,
वे जिज्ञासा, साहस और निरंतर मेहनत से बनते हैं।
इसीलिए अपने विचारों को उड़ान देना ज़रूरी है,
क्योंकि हर महान खोज,
जो आज राष्ट्र का गौरव है,
कभी किसी युवा मन में जन्मे
एक छोटे-से विचार से ही शुरू हुई थी।

देवांश शुक्ला-10 एफ

सृष्टि

देखने में बड़ी अशक्त हो
पर बड़ी सशक्त हो
कौन तुम्हें अबला कहे
कौन ऐसा मूर्ख है?
जो तुम्हें पहचान न सका
वही तो अबला है।
तुम अगर चाहो
तो पृथ्वी को हिला दो
तुम अगर चाहो
तो पर्वत को हिला दो
तुम अगर चाहो
तो नदियों को रुका दो
तुम अगर चाहो
तो जंगलों को सुखा दो
तुम अगर चाहो
तो हरियाली ला दो
तुम अगर चाहो तो
सृष्टि को रचा दो
क्योंकि.....तुम तो स्वयं ही सृष्टि हो।

अदिति श्रीवास्तव-10 एफ

गगन रूपी रंगमंच

भोर की पहली किरण के संग,
सूर्य की पीली चमक के रंग,
जलधर के पीछे छिप जाते हैं,
जब चंचल हवा के झोंके इठलाते हैं।

बादल रोते हैं भर-भर के,
वस्त्र गीले हर नर के,
शीतल सौन्दर्य गुलाब को हुआ प्रदान,
खिल उठी हर कली, मगन हुआ हर उद्यान।

मृगशावक के हुए गहरे, वे धब्बे श्वेत,
और फैली हवा में सुगंधित भीनी रेत।
वर्षा से बचने शिशु चिड़िया के डैने में छिप जाता है,
और श्वान तो बरखा में आश्रय ही नहीं ढूँढ़ पाता है।

अनायास तब सौदामिनी प्रहार करती है,
वह गगन से कदापि नहीं डरती है।
आकाश तब तो रंगमंच बन जाता है,
जब नीरद रोता, चंचला चमकती, और वायु नृत्य करता नज़र आता है।

इस रंगमंच में सूर्य सूत्रधार की भूमिका निभाता है,
जहाँ इंद्रधनुष रूपी परदा लग जाता है, तब नाट्य का अंत आता है।

विहान ठक्कर -10 बी

“आसमान से आगे - उड़ान”

चट्टान के उस छोर खड़ा,
देख रहा था नभ को बड़ा,
नीचे गहरी खामोशी थी,
ऊपर सपनों की रोशनी थी।

दौड़ रहे हैं सबकी देखा-देखी,
किसकी मंज़िल, किसकी लेखी?
चेहरों पर मुस्कान सजी है,
मन में फिर भी कमी बसी है।

फिर एक कदम बढ़ा जो आगे,
छूट गए पीछे डर के धागे,
न जाने गिरना था या उड़ना,
न जाने रुकना था या बढ़ना।

बड़ा हुआ तो जाना मैंने,
कुछ खोया, कुछ पाया मैंने,
दुनिया जीती, खुद से हारा,
या खुद को पाया-ये प्रश्न हमारा।

पंख मिले तो उड़ना सीखा,
गिरकर फिर से उठना सीखा,
हर ठोकर ने राह दिखाई,
हर मुश्किल ने बात बताई।

अब भी चलता हूँ उस राह पर,
कभी धूप में, कभी छाँह पर,
मंज़िल से अधिक तलाश है मेरी,
अपने ही भीतर की आवाज़ है मेरी।

उम्र नहीं है कोई निशानी,
कब समझ आए जीवन-कहानी,
कोई बचपन में बड़ा हो जाता,
कोई अंत समय तक समझ न पाता।

कभी था मन बिल्कुल बेपरवाह,
आज तलाशता अपनी राह,
दुनिया से पूछूँ या खुद से सवाल-
क्या यही है मेरी राह?

आज सभी को ऊँचा उठना,
बिन मेहनत के आगे बढ़ना,
मंज़िल चाहिए, राह नहीं,
सपना चाहिए, चाह नहीं।

शायद उड़ान आसमान नहीं,
हर उत्तर का नाम नहीं,
शायद उड़ान वही पहचान-
जब खुद से पूछे एक इंसान।

वंश फूलवानी-12 ई

नैतिक मूल्यों पर दोहे

समय बड़ा अनमोल है, व्यर्थ न इसे गँवाएँ।
जो समय का मान करे, सफलता वह पाएगा।

मेहनत से जो जी न चुराए, मंजिल उसके पास।
लगन रखे जो कर्म में, पूरी हो हर आस।

सोच की राह कठिन सही, फिर भी रखना साहस।
झूठ छोड़ के सत्य अपनाएँ, सदा दिलाएँ हर्ष।

माता-पिता का मान करो, रखना उनका ध्यान।
उनके आशीर्वाद से, बढ़ता अपना मान।

मित्र वही सच्चा बने, जो दे सही सलाह।
गलत राह से रोककर, दिखलाए सच्ची राह।

मोबाइल ज्ञान का साधन है, मत बन इसका दास।
समय बाँटकर जो चले, सफलता है उसके पास।

खुद पर विश्वास रख सदा, मन माने खुद की हार।
कोशिश करने वालों की, खुलती जीत की राह।

क्रोध मनुष्य का शत्रु है, रख इस पर नियंत्रण।
मीठे वचन बोलकर, जीत ले हर मन।

दुःख में जो सहयोग दे, वही सच्चा इंसान।
दूसरों की मदद से, बढ़ता अपना मान।

पेड़ लगाएँ, जल बचाएँ, धरती का रखें ध्यान।
स्वच्छ प्रकृति से ही मिले, सुखी जीवन महान।

मिशिका मित्तल -8 ब

प्रकृति को हमें बचाना है।

आओ शपथ हम लेते हैं,
प्रकृति को हमें बचाना है।
जन-जन को जागरूक करना है,
प्रकृति को मुरझाने से बचाना है।

प्रकृति है तो हम हैं,
हम हैं तो कल है।
प्रकृति हमारी संकट में है,
हमें इसे बचाना है।

कूड़ा-कचरा ना हम फेंके इधर-उधर,
प्लास्टिक को ना हम फेंके पानी में।
पेड़-पौधे है प्रकृति की सुंदरता,
लोगों को इन्हें काटने से बचाना है।

पेड़ हमें प्रति माह लगाना है,
दूषित पर्यावरण से प्रकृति को बचाना है।
जीव- जंतु धरती के धरोहर हैं,
इन्हें प्लास्टिक खाने से बचाना है।

आओ शपथ हम लेते हैं,
प्रकृति को हमें बचाना है।

मोना कुमारी
माता- यशवी गौतम -8 ब

लेखनी की उड़ान

शिक्षा का महत्त्व एवं विकसित भारत में इसका योगदान

शिक्षा का हमारे देश में बहुत महत्त्व है। भारत एक लोकतान्त्रिक गणराज्य वाला देश है जिसके सभी नागरिकों को समान व निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है ।

शिक्षा हमारे आत्मविश्वास और ज्ञान को बढ़ाने में बहुत मदद करती है। शिक्षित व्यक्ति ही हमारे समाज का दर्पण होता है। हमारे संवैधानिक अधिकार के अनुसार गरीब से लेकर अमीर तक कोई भी भारतीय नागरिक पाठशाला/ विद्यालय में अपनी शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

दिमाग को विकसित करने के लिए शिक्षा की बहुत जरूरत है। इस दिशा में हमारे माननीय लोकप्रिय यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास भाई मोदी जी ने देश में बहुत संख्या में सरकारी विद्यालय खोलकर बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है, जिसके लिए हमारे देश की जनता उनकी आभारी है ।

शिक्षित व्यक्ति ही देश के सामाजिक,आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में सहभागी होता है । हमारे देश में अभी भी शिक्षा का स्तर संतोषजनक नहीं है, आज भी ग्रामीण इलाकों में महिलाएँ न्यून शिक्षित हैं ,जिसके कारण उनका विकास सही से नहीं हो रहा है।

यह शिक्षा का ही परिणाम है कि हमारे देश के यंत्री व वैज्ञानिक आज चन्द्रमा तक पहुँचकर हमारे देश का नाम और गौरव ऊँचा कर रहे हैं। हमारे धर्मग्रंथों,वेदों में भी शिक्षा के महत्त्व के बारे में ज़िक्र है। ग्रंथों में लेख है कि “विद्या ददाति विनयम” अर्थात विद्या विनय देती है जिससे ज्ञान प्राप्त होता है और मनुष्य अच्छा जीवन व्यतीत करता है।हमारे देश भारत में वैदिककाल से ही गुरुकल व्यवस्था के ज़रिए शिक्षा को बढ़ावा मिला है ।

हमारे स्वन्तंत्रता संग्राम सेनानियों, आधुनिक भारत के निर्माताओं ने भी शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए कहा है कि “शिक्षा ही गुलामी की ज़ंजीरों से देश को आज़ाद करा सकती है” इसलिए पढ़ो और एकजुट रहो ।

हमारे देश में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने नए महाविद्यालय ,डिजिटल पाठशाला ,लर्निंग एप्प ,सोशल मीडिया / वेबपोर्टल स्थापित किए हैं और यहाँ तक कि NCERT के पाठ्यक्रम में भी आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस लर्निंग शामिल कर शिक्षा के स्तर को बढ़ाया है।

'पढ़ेगा तभी बढ़ेगा' विकसित भारत बनाने की दिशा में यह केवल एक वाक्य नहीं है अपितु देश को विकसित बनाने का मूल मंत्र है । शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए आज देश के सभी राज्यों में राज्य सरकारों, सामाजिक संघठनों द्वारा नागरिक को जागरूक किया जाकर विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान की जा रही है जिससे देश के सभी संवर्गो में पढ़े-लिखे युवा अच्छा कार्य कर देश की प्रगति में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। परिणामस्वरूप देश की इकॉनॉमी, सकल घरेलू उत्पाद में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिससे देश आशान्वित है कि बढ़ती हुई शिक्षा ही विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने में महत्त्वपूर्ण उत्प्रेरक है।

'शिक्षा ही विकसित भारत का मूल मंत्र व आधार है'

नीति पाराशर-6 डी

मेरी यादगार वैष्णोदेवी यात्रा

'जय मातादी!'-ये शब्द आज भी मेरे कानों में गूँजते हैं। जब भी मैं अपनी वैष्णो देवी यात्रा को याद करती हूँ, मेरे चेहरे पर अपने-आप मुस्कान आ जाती है। यह यात्रा सिर्फ़ एक धार्मिक यात्रा नहीं थी, बल्कि रोमांच, मस्ती, चुनौतियों और यादगार पलों से भरा एक खूबसूरत अनुभव थी।

गर्मी की छुट्टियों का पहला दिन था। मैं सुबह जल्दी उठ गई क्योंकि आज मुझे अपने परिवार के साथ जम्मू जाना था। पहली बार वैष्णो देवी के दर्शन करने का उत्साह मेरे मन में साफ़ दिखाई दे रहा था। जल्दी-जल्दी तैयार होकर हम एयरपोर्ट पहुँचे और कुछ ही देर में हमारी फ्लाइट आसमान में उड़ान भर रही थी।

जम्मू पहुँचने के बाद हम कार से कटरा की ओर रवाना हुए। लगभग डेढ़ घंटे की यात्रा के बाद हम होटल पहुँचे। सामान रखते ही हम अपने भाई गुगु से मिलने गए। लेकिन वहाँ पहुँचकर जो पता चला, उसे सुनकर हम सब हैरान रह गए-वह तो हमारे बिना ही रिवर राफ्टिंग करने चला गया था! इतना ही नहीं, उसने हमें दो घंटे तक भूखा भी बैठाए रखा क्योंकि वह हमारे साथ ही खाना खाना चाहता था। जब वह वापस आया, तब तक हम सबकी भूख चरम पर पहुँच चुकी थी। आखिरकार हमने मिलकर स्वादिष्ट भोजन किया और फिर थोड़ी देर आराम करने चले गए।

मेरे कमरे में एक बंक बेड था। मैं ऊपर वाली बर्थ पर और गुगु नीचे सोया। थोड़ी ही देर बाद मेरी नींद एक अजीब तरीके से खुली। गुगु मुझ पर तकिए फेंक रहा था! उसकी शरारत देखकर पहले तो मुझे गुस्सा आया, लेकिन फिर हम दोनों ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

शाम होते ही हमारी असली यात्रा शुरू हुई। लंबी कतार में लगकर हमने अपने RFID कार्ड बनवाए और पूरे उत्साह के साथ “जय माता दी” के जयकारे लगाते हुए चढ़ाई शुरू कर दी। रास्ते में हमने बाँस की लाठी, पट्टियाँ और पानी की बोतलें खरीदीं। छोटा गुगु प्रैम में आराम से बैठा था, जबकि हम पैदल चढ़ाई कर रहे थे।

करीब 20–25 मिनट बाद हमने पहला विश्राम किया और ठंडा नींबू पानी पिया। आगे बढ़ते हुए कभी हम बातें करते, कभी भजन सुनते और कभी आसपास के सुंदर पहाड़ों को निहारते। रास्ते में आइसक्रीम खाना भी किसी छोटे-से जश्न से कम नहीं था। धीरे-धीरे हम अर्धकुमारी पहुँचे। अब तक शरीर थक चुका था, इसलिए मैंने लगभग आधे घंटे तक आराम किया। फिर हिम्मत जुटाकर हम आगे बढ़े और आखिरकार माता के भवन पहुँच गए।

भवन पहुँचकर हमने अपने जूते उतारे। ठंडी ज़मीन ने जैसे सारी थकान को पल भर के लिए भुला दिया। कुछ ही देर बाद वह पल आया, जिसका हम बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। माता वैष्णो देवी के पवित्र दर्शन करते ही मन श्रद्धा और शांति से भर गया। उस क्षण की अनुभूति को शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए आज भी कठिन है।

दर्शन के बाद हम सूर्योदय देखने के लिए वहीं रुक गए। जब सूरज की पहली सुनहरी किरणें पहाड़ों पर पड़ीं, तो पूरा वातावरण अद्भुत लगने लगा। ऐसा दृश्य मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

इसके बाद हम घोड़ों पर बैठकर भैरव बाबा के मंदिर गए। घोड़े की सवारी रोमांचक तो थी, लेकिन वापस लौटते समय मेरे पैर, कमर और पीठ पूरी तरह अकड़ चुके थे। मैं बहुत थक गई थी, फिर भी मेरे चेहरे पर मुस्कान थी, क्योंकि मुझे माता रानी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

यह यात्रा मुझे हमेशा याद रहेगी। इसने मुझे सिखाया कि कठिन रास्तों पर धैर्य और विश्वास के साथ आगे बढ़ने से मंज़िल अवश्य मिलती है। आज भी जब मैं 'जय माता दी' सुनती हूँ, तो मेरी आँखों के सामने पहाड़ों की खूबसूरती, परिवार के साथ बिताए वे अनमोल पल और माता रानी के दिव्य दर्शन ताज़ा हो जाते हैं |

अमायरा चौधरी-7 सी

हिंदी भाषा का इतिहास

हिंदी भारत की प्रमुख और समृद्ध भाषाओं में से एक है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्किभारत की संस्कृति, परंपरा, साहित्य और भावनाओं की पहचान भी है। हिंदी का इतिहास बहुत पुराना और रोचक है।

हिंदी का विकास मुख्य रूप से संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से प्रारंभिक हिंदी के रूप में हुआ। लगभग 10वीं–11वीं शताब्दी के आसपास हिंदी के प्रारंभिक रूप दिखाई देने लगे। समय के साथ अलग-अलगक्षेत्रों में हिंदी की अनेक बोलियाँ विकसित हुई, जैसेअवधी, ब्रजभाषा, भोजपुरी, बुंदेली और राजस्थानी आदि।

हिंदी साहित्य के विकास में भक्तिकाल का विशेष योगदान रहा। कबीर, तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई जैसे महान कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति, प्रेम, समानता और मानवता का संदेश दिया। इसके बाद रीतिकाल में काव्य और सौंदर्य-वर्णनको विशेष महत्व मिला।

आधुनिक हिंदी के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। उन्होंने हिंदी को आधुनिक साहित्य और पत्रकारिता के लिए सशक्त बनाया। आगे चलकर महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारीसिंह 'दिनकर' औरअनेक साहित्यकारों ने हिंदी को और समृद्ध किया।

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को देवनागरी लिपि में संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसी कारण हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

आज हिंदी भारत के साथ-साथविश्व के कई देशों में बोली और समझी जाती है। हिंदी ने समय के साथ नए शब्दों और तकनीक को अपनाकर स्वयं को आधुनिक बनाया है। सच ही कहा जा सकता है कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, विरासत और भावनाओं की आवाज़ है।

मिशिका मित्तल -8 बी

बूँद- बूँद की सीख

आरव एक चंचल और हँसमुख लड़का था। उसे खेलना बहुत पसंद था, लेकिन एक आदत उसकी अच्छी नहीं थी। वह अक्सर हाथ धोने या खेलते समय नल खुला छोड़ देता था। जब भी माँ उसे टोकतीं, वह हँसकर कह देता, “इतने से पानी से क्या फ़र्क पड़ेगा?”

कुछ महीनों बाद गाँव में बारिश बहुत कम हुई। धीरे-धीरे कुएँ और तालाब सूखने लगे। लोगों को पीने के पानी के लिए भी दूर-दूर तक जाना पड़ता था। एक दिन आरव ने अपनी दादी को पानी की एक-एक बूँद संभालकर इस्तेमाल करते देखा। उस दृश्य ने उसके मन को छू लिया। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ।

उस दिन से आरव बदल गया। उसने नल खुला छोड़ना बंद कर दिया, घर में सभी को पानी बचाने की याद दिलाने लगा और अपने दोस्तों के साथ मिलकर “जल बचाओ” अभियान भी शुरू किया। उसकी छोटी-सी पहल से पूरे गाँव में जागरूकता फैल गई।

कुछ समय बाद जब बारिश हुई, तो लोगों ने वर्षा जल का भी सही ढंग से संग्रह किया। अब गाँव में पहले जैसी पानी की समस्या नहीं रही। आरव समझ चुका था कि हर छोटी अच्छी आदत भविष्य को बेहतर बना सकती है।

शिक्षा: ‘पानी की हर बूँद अनमोल है। आज जल बचाएँगे, तभी कल सुरक्षित और खुशहाल होगा।’

-माही चंदयाल

क्रियात्मक गतिविधियाँ


नुक्कड़ नाटक
अलग है, पर कम नहीं!
Shaping Glocal Learners
NOISE
CLAPBOX


नुक्कड़ नाटक
अलग है, पर कम नहीं!
Shaping Glocal Learners
NOISE
CLAPBOX


हिन्दी दिवस
प्रार्थना सभा


हिन्दी दिवस
प्रार्थना सभा


हिन्दी दिवस
प्रार्थना सभा


स्वदेश
हिंदू सिख, ईसाई, मुस्लिम रहते यहाँ भाई भाई


हरिद्वार




कविता - 1
स्वदेश
एक भारत श्रेष्ठ भारत


कविता - 1
स्वदेश

गुरु-हृदय की अभिव्यक्ति

मेरा देश मेरा परिवार
हर एक की सोच...

मेरा देश ही मेरा पूरा परिवार है। जहाँ खुली हवा में साँस लेना और पक्षियों का मधुर चहचहाना हमारी स्वतंत्रता और खुशहाली का प्रतीक है। जिस प्रकार एक परिवार के सदस्य एकजुट होकर हर सुख-दुःख में एक-दूसरे का साथ देते हैं, उसी प्रकार देश की प्रगति और समृद्धि के लिए प्रत्येक नागरिक का योगदान आवश्यक है। आज की भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में अपने बुज़ुर्गों के साथ कुछ सुकून भरे पल बिताना, उनके अनुभवों से सीखना और बच्चों को सही दिशा एवं संस्कार देने से कभी पीछे नहीं हटना भी हमारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

अंततः, परिवार तभी पूर्ण और सुखी बनता है, जब उसका प्रत्येक सदस्य अपनी जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी, समर्पण और प्रेम से निभाए।
इसी तरह हमारा देश भी तभी सशक्त और समृद्ध बनेगा, जब हम सभी मिलकर इसे अपना परिवार समझें और इसकी जिम्मेदारियों को अपना कर्तव्य मानकर निभाएँ।

नियति अग्रवाल

बच्चे की कहानी

हर बच्चे की है एक कहानी,
जिसमें छुपी है उनके, सपनों की कहानी।
कोई चमके सूरज सा, तो कोई चाँद सा शीतल रहे।
कोई भरता रंग शब्दों में,कोई पढ़ता मन चित्रों के,
कोई ढूँढ़ता प्रश्न गणित के, तो कोई कोशिश करता संसार को पढ़ना।
कोई रहता चुप-चुप,तो कोई मन ही मन कुछ कहता,
और कोई हँसते-हँसते ,अपनी हँसी से जग को सजाता।
हर बच्चे की सोच अलग है, हर सपने का दृष्टिकोण अलग है।
किसी को उड़ना है आसमान में, किसी को बनाना है अपना संसार ।
हम शिक्षक हैं, राह दिखाएँगे,
पर उनके पंख न बनकर उनका हौंसला बन जाएँगे।
पर उन्हें दिलाना होगा बस इतना विश्वास-
'वे जैसे हैं, वैसे ही खास हैं, उनके भीतर भी एक अलग सा प्रकाश है।'
खाली अंकों से ही नहीं बनती है पहचान
और न ही अंक तय करते हैं बच्चे की उड़ान।
एक छोटी कोशिश, एक मुस्कान और हौंसला,
बदल सकता है आपका पूरा जहान।
कभी-कभी आप भी हमें सिखाते हैं, गिरकर फिर से उठना हमें समझाते हैं।
उनकी आँखों के छोटे-छोटे सपने, हमारी आँखों को बड़े उजाले दे जाते हैं।
इसलिए हर उस नन्हे मन को पढ़िए,
केवल किताबों से नहीं-
उसकी आँखों से, उसकी खामोशी से, उसकी मुस्कान से।
क्योंकि- हर बच्चे की है एक कहानी!!

पूजा सिंह

कर्म ही मूल-मंत्र

उठ रे बालक! कर्म कर
कर्म से ही तेरा जीवन है, कर्म से ही तेरा उद्धार
कर्म से ही है सफलता, कर्म से संभावनाएँ अपार।
कर्म ही है धर्म तेरा, कर्म है गीता- कुरान,
कर्म ही है जाति तेरी, कर्म ही तेरा पुराण।
कर्म को जिसने चुना, उसीने शिखर को चूमा,
जीवन की पथरीली राहों पर, उसी का परचम घूमा।
आज समय है, अभी समय है, यही समय है, कल नहीं समय है,
कल- कल करना छोड़कर आज देना सबको विस्मय है।
तुझसे होगा, तुझी से होगा,
वही होगा जो तू ठानेगा, वही होगा जो तू मानेगा।
असफलता का भय छोड़, मन में विश्वास जगा,
तू कल का भारत है, इस देश में नई आस जगा।

हेमलता राठौर

किताबें और स्क्रीन: डिजिटल दौर में बच्चों का सही मार्गदर्शन

आज का समय परिवर्तन का समय है। चॉक और टॉक की पारंपरिक दुनिया से निकलकर हम स्मार्ट बोर्ड और डिजिटल स्क्रीन के युग में कदम रख चुके हैं। जहाँ एक ओर इंटरनेट ने ज्ञान के असीम द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर इसने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य, एकाग्रता और जीवनशैली पर नए सवाल भी खड़े किए हैं। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि क्या तकनीक एक वरदान है या एक नई चुनौती? उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि हम एक समाज के रूप में—शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों के रूप में—इसका संतुलन कैसे बनाते हैं।

विद्यार्थियों के लिए: स्क्रीन से सृजन की ओर

प्रिय विद्यार्थियों, डिजिटल तकनीक केवल मनोरंजन या सोशल मीडिया स्क्रॉल करने का साधन नहीं है, बल्कि यह आपकी रचनात्मकता और ज्ञान का नया प्रसार देने वाला एक शक्तिशाली साधन है।

स्मार्ट उपयोग: तकनीक का उपयोग गेमिंग या रील्स में समय गंवाने के बजाय कोडिंग, भाषाएँ सीखने, डिजिटल आर्ट, या शिक्षा देने वाले वास्तविक चित्र देखने के लिए करें।

डिजिटल अनुशासन: अध्ययन के समय फोन को 'डू नॉट डिस्टर्ब' मोड पर रखें। स्क्रीन समय और वास्तविक जीवन जैसे-खेल-कूद, पठन-पाठन के बीच एक स्पष्ट सीमा रेखा खींचना आपकी एकाग्रता को कई गुना बढ़ा सकता है।

सकारात्मक दृष्टिकोण: याद रखें, इंटरनेट पर आपकी उपस्थिति आपके व्यक्तित्व को दर्शाती है। इसका उपयोग ज्ञान बाँटने और सकारात्मक विचार साझा करने के लिए करें।

अभिभावकों के लिए: पाबंदी नहीं, संवाद अपनाएँ

आधुनिक दौर में बच्चों को तकनीक से पूरी तरह दूर रखना न तो संभव है और न ही व्यवहारिक। अभिभावक के रूप में हमारी भूमिका एक नियंत्रक की नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक की होनी चाहिए।

रोल मॉडल बनें: बच्चे उपदेशों से नहीं, आचरण से सीखते हैं। यदि हम स्वयं भोजन की मेज़ पर या परिवार के समय फोन में व्यस्त रहेंगे, तो बच्चों से संयम की अपेक्षा करना उचित नहीं होगा।

घर में 'नो-स्क्रीन ज़ोन' बनाएँ: रात के खाने के समय और सोने से एक घंटे पहले घर में 'नो-स्क्रीन' नियम लागू करें। इससे न केवल नींद की गुणवत्ता सुधरेगी, बल्कि पारिवारिक रिश्तों में भी मिठास आएगी।

खुला संवाद और सुरक्षा: बच्चों पर केवल पाबंदियाँ लगाने के बजाय उनसे डिजिटल दुनिया की सुरक्षा और साइबर स्वच्छता के बारे में खुलकर चर्चा करें। उनके ऑनलाइन मित्र और उनकी रुचियों में स्वाभाविक दिलचस्पी लें।

'शिक्षा केवल किताबों में बंद ज्ञान का नाम नहीं है, और न ही तकनीक से पूरी तरह विमुख हो जाने में समझदारी है। असली बुद्धिमत्ता परंपरा और आधुनिकता के सही संतुलन में है। आइए, हम सब मिलकर अपने बच्चों को एक ऐसा माहौल दें जहाँ वे स्क्रीन का सही उपयोग सीखें, किताबों से प्यार करें, और नैतिक मूल्यों के साथ जीवन में आगे बढ़ें।'

आरती व्यास

ये भी देश-प्रेम है

सीमा पर लड़कर मिटना, तिरंगे में वापस आना,
सबको कहां नसीब है, ये तो किस्मत की बात है ।

पर नहीं मरे जो सीमा पर, क्या वो देश प्रेमी नहीं?
नहीं गए जो सेना में, क्या वो वीर बहादुर नहीं?

देशप्रेम की कसमें केवल, सैनिक ने ही खाई नहीं।
बाकी जनता भी तो, यारों जय जयकार करती रहती,
मां भारती पर कुर्बान, चिल्ला चिल्ला कर कहती रहती।

अपनी खेत की माटी से, जब पैदावार बढ़ाओगे,
भूखे को भोजन देकर, तुम भी वीर कहलाओगे।

दफ्तर हो या हो दुकान, जब काम करोगे सच्चाई से,
रिश्वत और बेईमानी का, जब कहीं नाम नहीं होगा,
तब देश हमारा भी वंदे भारत कहलाएगा।

ट्रेन, बसें और दुकानों को, गुस्से में जब जलाओगे
सच कहना फिर कैसे तुम, देशभक्त कहलाओगे ?

सड़कों पर कचरा मत फेंको, सुंदर देश बनाना है ।
पानी और बिजली बचाकर, असली फर्ज निभाना है।
शिक्षक बन कर सही पढ़ाना, डॉक्टर बन कर दर्द मिटाना ,
हर मजहब का आदर करना, सबमें सद्भाव बढ़ाना है।

अपने हिस्से का हर दायित्व, जो निष्ठा से निभाएगा,
बिन युद्ध लड़े भी वो, देशभक्त कहलाएगा ।

रूपिका अग्रवाल

मैं ढूँढ़ता जिसे हूँ!

मैं ढूँढ़ता जिसे हूँ, वह गुम हुआ कहाँ है?
मैंने जिसे था चाहा, ऐसा जहाँ कहाँ है?

निस् फिकर होकर उड़ लूँ, वह आसमान कहाँ है?
जो खो दिया बेसुध होकर, वह बचपन कहाँ है?

संसद से अब सड़क तक, बस बहस बाजियाँ हैं।
जीते थे देश के वास्ते, अब ऐसे नेता कहाँ हैं?

हम खुद को तराशते हैं, ऐसा उनका बयाँ है।
खुद से निकाल कर देखें, तो पाए सच्चाइयाँ हैं।

हृदय की गहराइयों को टटोल, हर आदमी जवाँ है।
बस एक चिंगारी भर दे, फिर देख वो महाँ है।

जिसकी भी गिरेबाँ में झाँको, सिर्फ तनहाइयाँ हैं।
कड़े संघर्ष की भी जीत पर भी, अब बेताबियाँ हैं।

बच्चे यह मेरे भोले-भाले जाल- साज ये जहाँ है।
जिनको कुछ जादू दे दूँ ऐसा हुनर कहाँ है?

जी सकूँ सुख चैन से, वह आशियाँ कहाँ है?
झूठ की इस आपाधापी में, नमोनिशाँ कहाँ है?

अनुरागसिंह सेंगर

हमारा अभिमान: भारतवर्ष

उत्तर में हिम-शिखर चमकता, दक्षिण सागर लहराता है,
गंगा-यमुना की धाराओं से, जीवन-रस बहता जाता है।
हर मौसम की रंग-रंगीली, छटा जहाँ मन भाती है,
ऐसा पावन देश, भारत वर्ष कहलाता है।

भिन्न-भिन्न हैं वेश-भूषाएँ, भिन्न-भिन्न हैं बोली-बानी,
फिर भी एक पिरोए दिल से, बहती यहाँ एकता सुहानी।
जो जग को करुणा और प्रेम का, अनुपम पाठ पढ़ाता है,
ऐसा पावन देश, भारत वर्ष कहलाता है।

वेद-पुराणों की यह धरती, ऋषियों की तपोभूमि है,
जहाँ सत्य की पावन ज्योति, युग-युग से मुसकाती है।
कर्म-धर्म का अमर ज्ञान जो, दुनिया को सिखलाता है,
ऐसा पावन देश, भारत वर्ष कहलाता है।

वीरों की शहादतों का यह, पावन अमर शिवाला है,
मातृभूमि की रक्षा हित जो, हँस कर मिटने वाला है।
जिसके कण-कण से बलिदानों का, अमर तराना आता है,
ऐसा पावन देश, भारत वर्ष कहलाता है।

ज्ञान-प्रगति के नए क्षितिज पर, नित जो कदम बढ़ाता है,
विश्व-शांति और बंधुत्व का, जो परचम लहराता है।
जिसकी खातिर हर भारतवासी, निज सर्वस्व लुटाता है,
ऐसा पावन देश, भारत वर्ष कहलाता है।

रामअवतार आर.सिंह

संपादकीय मंडल

प्रमुख कार्य प्रभारी	श्रीमती हेमलता राठौर
संपादिका	श्रीमती आरती व्यास
संकलनकर्ता	अनुराग सैंगर
प्रतिलिपि संशोधनकर्ता	श्री अनुराग सैंगर श्रीमती हेमलता राठौर
तकनीकी प्रबंधक	श्रीमती तृप्ति शर्मा

DELHI PUBLIC SCHOOL BOPAL AHMEDABAD

CONTACT WITH US ON SOCIAL MEDIA

dpsbopal-ahd.edu.in

www.youtube.com/@dpsbopal-ahmedabad

texthttps://www.facebook.com/dpsbopal.ahmedabad/

texthttps://www.instagram.com/dps_bopal_ahmedabad/